The Board of Islamic Publications

स्वर्ग और नरक

लेखक
वारिस हुसैन

स्वर्ग और नरक

लेखक

वारिस हुसैन

द बोर्ड ऑफ़ इस्लामिक पब्लिकेशंस
नई दिल्ली-110025

© The Board of Islamic Publications

नाम किताब	:	स्वर्ग और नरक
लेखक	:	वारिस हुसैन
प्रथम संस्करण	:	2022 ई॰
पृष्ठ	:	74
संख्या	:	500
मूल्य	:	₹ 62/-
मुद्रक	:	ज़ाविया प्रिन्ट

प्रकाशक :

द बोर्ड ऑफ़ इस्लामिक पब्लिकेशंस
D-307, अबुल-फ़ज़्ल इंक्लेव
जामिआ नगर, नई दिल्ली-25

Book Name : Swarg ayr Narak
By : Waris Hussain
First Edition : 2022 Pages : 74
Price : 62/- ISBN :

Printed by

The Board of Islamic Publications
D-307-A, Abul Fazl Enclave,
Jamia Nagar, New Delhi-110025
Phone : 011-26971423, Mob.: 9990862029
E-mail : radianceweekly@gmail.com
Website : www.radianceweekly.in

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम
'अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान और बड़ा दयावान है'

दो शब्द

मौत के बाद इनसान कहाँ जाता है? क्या मौत के बाद कोई जीवन है या नहीं? यदि कोई जीवन है तो क्या वह भी अस्थाई होगा या शाश्वत? क्या मौत के बाद भी इनसान का बार-बार जन्म और मृत्यु का सिलसिला चलता रहेगा और कहाँ तक के लिए? इससे मुक्ति पाने की सूरत क्या होगी? मौत के बाद यदि एक बार के लिए सदैव का जीवन है, तो वहाँ सफलता पाने के लिए दुनिया के इस सीमित और अस्थाई जीवन में इनसान को कैसा जीवन व्यतीत करना होगा? किन कामों को वह करे और किन कामों से उसे बचना होगा? मृत्यु-पश्चात जीवन में सफलता और असफलता का प्रयोजन क्या है? यह कुछ प्रश्न हैं, जो मन-मस्तिष्क में पैदा होते हैं?

मौत के बाद क्या होगा, इस बारे में विज्ञान, बुद्धि और दर्शनशास्त्र हमारा मार्गदर्शन करने में असमर्थ हैं, क्योंकि यह उनकी परिधि से बाहर है। इन प्रश्नों से सम्बन्धित उनके सोच-विचार और रायों में सहमती नहीं पाई जाती, बल्कि घोर विरोधाभास पाए जाते हैं। लेकिन धर्म ने इस विषय में मार्गदर्शन का दावा किया है। धर्मों की रहनुमाई और शिक्षाओं में भी मतभेद हैं और उनकी धारणाएँ एक-दुसरे से टकराती हैं। प्रश्न यह है कि किस धर्म की बात को सच मानें? एक ही समय में सब बातें सच नहीं मानी जा सकतीं, क्योंकि यह मात्र आस्था का विषय नहीं है, बल्कि इनसान के सांसारिक जीवन से उनका गहरा सम्बन्ध है। इनसान जिस तरह का विचार और आस्था रखेगा उसी के अनुरूप चरित्र व किरदार का निर्माण उसके जीवन में होगा।

इनसान की जरूरत केवल रोटी, कपड़ा, मकान और इलाज नहीं है। जीवन की सही रहनुमाई और उपर्लिखित मूल प्रश्नों के सही उत्तर से आगाह होना भी आवश्यकता है। इनसानों की इसी आवश्यकता की पूर्ति के लिए ईश्वर ने दुनिया में हर क्षेत्र व कौम में अपने पैग़म्बर व नबी भेजे, जिन्होंने उसके आदेशानुसार हर क्षेत्र में इनसानों का मार्गदर्शन किया। उसके अन्तिम ईशदूत हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) ने बताया कि जो भी उनके द्वारा प्रस्तुत की गईं शिक्षाओं को स्वेच्छा से स्वीकार करेगा और अपने एकाकी और सामूहिक जीवन में उनका अनुसरण करेगा तो सुख-चैन, तरक़्क़ी और भौतिक ख़ुशहाली पाएगा और मृत्यु-पश्चात् इनाम के रूप में स्वर्ग उसका ठिकाना होगा। इनकार और विद्रोह के परिणाम में मृत्यु के बाद ईश्वर उसे दण्डित करेगा और नरक की आग उसका मुक़द्दर होगी।

हर वह इनसान जो वर्तमान जीवन और फिर मौत के बाद सामने आनेवाले परिणाम से चिंतित है, उससे आग्रह है कि वह क़ुरआन और हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) के पवित्र जीवन और शिक्षाओं का अध्ययन करे और उनमें प्रस्तुत विचारों पर सोच-विचार करने के बाद ही यह निर्णय ले कि इन्हें स्वीकार करना है या अस्वीकार।

प्रस्तुत पुस्तक में स्वर्ग और नरक के दृश्यों का प्रभावशाली अन्दाज़ में चित्रण व वर्णन किया गया है। इसको पढ़ने के बाद स्वर्ग में होनेवाले आदर-सत्कार और वहां की नेमतों के बारे में जानकार दिल में उसे प्राप्त करने की भावना उत्पन्न होगी। इसी प्रकार नरक में दी जानेवाली यातनाएँ और वहाँ की भयानकता से भयभीत होकर स्वयं को उससे बचाने की भावना भी उत्पन्न होगी।

अल्लाह तआला से दुआ है कि इस जीवन के बाद हम सबको स्वर्ग का जीवन अता फ़रमाए और नरक की आग से बचाए। (आमीन!)

मुहम्मद इक़बाल मुल्ला
सचिव, जमाअत इस्लामी हिन्द
नई दिल्ली 110025

मृत्युपरान्त क्या कोई जीवन है?

स्वर्ग और नरक का अस्तित्व क्या वास्तव में है या यह मात्र कल्पना है? क्या मृत्युपरान्त कोई दूसरा जीवन भी है? क्या ऐसा कोई जीवन संभव है? संसार को नष्ट कर दिए जाने के उपरान्त क्या पुनः इसकी सृष्टि की जाएगी? और क्या इनसानों को दोबारा जीवित किया जाएगा? इस प्रकार के अनेकों प्रश्न हैं जो सदा से इनसानों के बीच वाद-विवाद का विषय रहे हैं। कुछ लोग हैं जो पुनः उठाए जाने पर दृढ़ विश्वास रखते हैं और कुछ इसे मात्र कोरी कल्पना ही ठहराते हैं। विज्ञान इन प्रश्नों का उत्तर देने में असमर्थ है क्योंकि यह उसका नहीं बल्कि धर्म का विषय है। यही कारण है कि सभी धर्मों में किसी न किसी रूप में मृत्युपरान्तजीवन एवं स्वर्ग-नरक का विवरण मिलता है।

> "प्रत्येक जीव मृत्यु का मजा चखनेवाला है, और तुम्हें तो क़ियामत के दिन पूरा-पूरा बदला दे दिया जाएगा। अतः जिसे आग (जहन्नम) से हटाकर जन्नत में दाख़िल कर दिया गया, वह सफल रहा। रहा सांसारिक जीवन, तो वह माया-सामग्री के सिवा कुछ भी नहीं।" (क़ुरआन 3:185)
>
> "श्रद्धा वाले लोग परलोक का ध्यान रखते हुए सत्कर्मों को निरन्तर मिलकर करते रहें।" (अथर्ववेद 6:122:3)
>
> "आनंद और स्नेह जहाँ वर्तमान रहते हैं, जहाँ सभी कामनाएं इच्छा होते ही पूर्ण हो जाती हैं, उसी अमरलोक (स्वर्ग) में मुझे निवास दो। (ऋगवेद 9:113:11)

इस्लाम का दृष्टिकोण और आख़िरत की धारणा

मृत्युपरान्त जीवन अथवा स्वर्ग-नरक के सम्बन्ध में इस्लाम का दृष्टिकोण बिलकुल सरल और स्पष्ट है और इनसानी जीवन पर अत्यन्त गहरा प्रभाव डालने की क्षमता रखता है। संसार की सृष्टि से लेकर इस धरती पर मानव-जीवन के आरंभ, उसका उद्देश्य, उसकी मृत्यु और फिर हिसाब-किताब के दिन का आना, इतने सहज रूप से समझाया गया है कि यह बिलकुल प्राकृतिक प्रतीत होता है और हर दिल इसको स्वीकार करने को लालायित हो उठता है।

इस्लाम बताता है कि यह विशाल संसार स्वयं से अस्तित्व में नहीं आ गया है, बल्कि एक अत्यन्त शक्तिशाली ईश्वर ने इसकी रचना की है और वही इसका संचालन भी कर रहा है। इसकी रचना में कोई उसका साझी है, न इसके संचालन में। इनसान भी इस संसार में स्वयं से नहीं उत्पन्न हो गया है बल्कि उसी ईश्वर ने उसकी सृष्टि की है और साथ ही उसे यहाँ जीवन व्यतीत करने के लिए मार्गदर्शन के तौर पर क़ुरआन के रूप में एक संविधान भी प्रदान किया है। इनसान का पूरा जीवन एक इम्तिहान है। इस बात का इम्तिहान कि वह अपना जीवन ईश्वरीय मार्गदर्शन का अनुसरण करते हुए व्यतीत करता है या उसकी अवहेलना में। एक पूर्व-निर्धारित समय पर संसार की सारी व्यवस्था समाप्त कर दी जाएगी और समस्त जीवन भी नष्ट कर दिया जाएगा। इसके उपरान्त समस्त इनसानों को एक नए संसार में पुनः जीवित किया जाएगा और उससे उसके जीवन के समस्त कर्मों का हिसाब लिया जाएगा। इस्लाम की भाषा में इस दिन को आख़िरत कहते हैं। ईश्वर की अदालत में वास्तविक और पूर्ण इन्साफ़ होगा। वहां न रिश्वत काम आएगी न कोई सिफ़ारिश। एक-एक इनसान के जीवन का पूरा रिकॉर्ड वहाँ मौजूद होगा और उसी के आधार पर

इनसानों को या तो अनंतकालीन स्वर्ग का जीवन मिलेगा या नरक का। इस्लाम की दृष्टि में इस प्रकार इनसान की वास्तविक सफलता यह है कि मृत्युपरान्त जीवन में वह नरक से बचा लिया जाए और उसे स्वर्ग में प्रवेश मिल जाए।

विभिन्न धर्मों में स्वर्ग और नरक की धारणा

स्वर्ग और नरक की धारणा उतनी ही पुरानी है जितनी की मानवता। यही कारण है कि किसी-न-किसी रूप में इसका वर्णन सभी धर्मों में पाया जाता है। वर्णन की विभिन्नता के उपरान्त भी सभी एकमत हैं कि मृत्युपरान्त धर्मशील, सज्जन, सत्य और पुण्य पर जीवन व्यतीत करनेवालों को पुरस्कृत कर जिस स्थान अथवा लोक में रखा जाएगा उसे स्वर्ग कहते हैं। इसके विपरीत अत्याचारी, पाखंडी और ईश्वर विरोधियों को दंड स्वरूप जिस स्थान में डाला जायेगा उसे नरक के नाम से जाना जाता है।

हिन्दू धर्म

हिन्दू धर्म के अनुसार स्वर्ग उस लोक को कहते हैं जहाँ देवताओं का वास होता है। स्वर्ग की यह धारणा वैसे तो हिन्दू धर्म की मुख्य धार्मिक पुस्तकों में पाई जाती है, परन्तु व्यवहारिक जीवन में पुनर्जन्म की आस्था ने स्वर्ग की इस धारणा को काफी धूमिल कर दिया है।

1. **अथर्ववेद 18/4/14**
   भावार्थः "हम सकाम यज्ञों से स्वर्ग को प्राप्त करके उन्हें निष्कामता से करते हुए प्रभु को प्राप्त करनेवाले हों। यही देवयान मार्ग है।"
2. **गीता 2.37**
   "अगर युद्ध में तू मारा जाएगा तो तुझे स्वर्ग की प्राप्ति होगी और अगर युद्ध में तू जीत जाएगा तो पृथ्वी का राज्य भोगेगा। अतः हे कुन्तीनन्दन तू युद्ध के लिये निश्चय करके खड़ा हो जा।"
3. **गीता 2.43**
   "कामनाओं से युक्त? स्वर्ग को ही श्रेष्ठ मानने वाले लोग

भोग और ऐश्वर्य को प्राप्त कराने वाली अनेक क्रियाओं को बताते हैं जो (वास्तव में) जन्मरूप कर्मफल को देनेवाली होती हैं।"

हिंदु धर्म की अनेकों पुस्तकों में विस्तार से नरक का वर्णन पाया जाता है। पुराणों में मृत्यु के पूर्व और पश्चात के जीवन का विस्तृत वर्णन प्रस्तुत किया गया है। इनमें मनुष्य के पापों के अनुसार अलग-अलग प्रकार के दण्डों के वर्णन के साथ ही 36 प्रकार के नरकों का उल्लेख किया गया है। ऋग्वेद और अथर्ववेद में नरक का विस्तृत वर्णन तो नहीं मिलता परन्तु यह स्पष्ट रूप से मिलता है कि पापी और दुराचारी नरक में डाले जायेंगे। मनुस्मृति में भी नरक का उल्लेख मिलता है जहां इनकी संख्या 21 बताई गई है।

बौद्ध धर्म

बौद्‌ध धर्म में निर्वाण की धारणा पाई जाती है अर्थात जीवन का एक ऐसी स्थिति में पहुँच जाना जहाँ समस्त कामनाओं का अंत हो जाए। इसी को सुख की चरम सीमा माना जाता है। स्वर्ग ही वह स्थान है जहाँ चरम सुख की प्राप्ति संभव है। बौद्ध की पुस्तकों में निर्वाण का विस्तृत वर्णन मिलता है जिसे एक प्रकार से स्वर्ग की अवधारणा के रूप में देखा जा सकता हैः

1. "भूख सबसे बड़ी बीमारी है, खंडा सबसे बड़ा रोग। बुद्‌धिमान, उन्हें वास्तविक रूप में जानने के उपरान्त, निबाना(निर्वाण), को ही सबसे बड़ा आनंद मानते हैं।" (धम्मपद 203)
2. "स्वास्थ्य सबसे बड़ा उपहार है, संतोष सबसे बड़ा धन है, एक विश्वसनीय मित्र सबसे अच्छा रिश्तेदार है, निबाना(निर्वाण) सबसे बड़ा आनंद है।" (धम्मपद 204)
3. "एकांत और निबाना(निर्वाण) की उत्तम शान्ति का स्वाद, जो धम्म के सार की खुशी में पीता है, भय और बुराई से मुक्त है।" (धम्मपद 205)

बौद्ध धर्म की मान्यता है कि कर्मों के अनुसार आत्मा को नरक

में दण्डित किया जाता है। संतों की निंदा करनेवाले, झूठ बोलने और बुरे कर्म करनेवाले पापी नरक में जाएंगे।

जैन धर्म

जैन धर्म लोक एवं परलोक दोनों को मान्यता देता है। इस धर्म के अनुसार पुण्य कर्मों का फल स्वर्ग के रूप में प्राप्त होता है। बौद्ध धर्म की तरह इसमें भी निर्वाण या मोक्ष की प्राप्ति ही जीवन का वास्तविक लक्ष्य है। इसमें जीवन का अंतिम और प्रधान लक्ष्य सभी कर्मों से मुक्त होकर शाश्वत सुख रूपी मुक्ति प्राप्त करना है।

1. "इस जीव का शरीर में जो निवास हो रहा है वह आयु-कर्म से ही होता है, मैं यद्यपि शरीर में स्थित हूँ तो भी काल की परिमित घड़ियों में धारण किया हुआ मेरा आयुरूपी जल शीघ्र ही गलता जाता है (उत्तरोत्तर कम होता जाता है) इसलिए मेरा वह आयुरूपी जल जब तक समाप्त नहीं होता तब तक मैं स्वर्ग और मोक्ष के मार्ग भूत जैनधर्म में उत्साह के साथ प्रवृत्ति करूँगा।"
   (उत्तर-पुराण 48:9-10)
2. "उसी समय सारस्वत आदि देवर्षियों (लौकान्तिक देवों) ने ब्रह्मस्वर्ग से आकर उनके विचारों की बहुत भारी प्रशंसा तथा पुष्टि की।" (उत्तर-पुराण 48:34)

जैन धर्म में नरक की अवधारणा भी मिलती है। पाप कर्मों के परिणाम स्वरूप असह्य कष्टों को भोगनेवाले नारकी कहलाते हैं और उनके रहने के स्थान को नरक कहते हैं।

सिख धर्म

सिख धर्म पुनर्जन्म के साथ-साथ स्वर्ग और नरक के अस्तित्व में भी विश्वास रखता है। गुरु ग्रन्थ साहिब में 'ईश्वर के राज्य' का वर्णन मिलता है जिसको दुसरे धर्मों में स्वर्ग के रूप में देखा जाता है।

1. ''जो लोग भगवान का ध्यान करते हैं वे मोक्ष प्राप्त करते हैं। उनके लिए, जन्म और मृत्यु का चक्र समाप्त हो जाता है।"
   (गुरु ग्रंथ साहिब जी, 11)

2. ''जो लोग पूर्णरूप से केन्द्रित होकर भगवान के नाम पर मनन करते हैं, और गुरु की शिक्षाओं का चिंतन करते हैं। उनके चेहरे हमेशा के लिए परमेश्वर के राज्य(स्वर्ग) में चमकते हैं।"

(गुरु ग्रंथ साहिब जी, 28)

पारसी धर्म

पारसी धर्म में स्वर्ग को एक अत्यंत विशाल और अति सुंदर बागीचे के रूप में प्रस्तुत किया गया है, जिसके चारों ओर विभिन्न प्रकार की अत्यंत सुंदर दीवारें बनी हुई हैं। उनका मानना है कि मृत्यु पश्चात सभी आत्माएं स्वर्ग में जाती हैं, परन्तु वहां पहुँचने में लगनेवाला समय उनके कर्मों पर निर्भर करता है। मृत्यु पश्चात हर आत्मा को एक पुल का रास्ता दिखाया जाता है। अच्छे कर्म करनेवालों के लिए वह पुल चौड़ा होता जाता है और स्वर्ग तक पहुंचा देता है। परन्तु बुरे कर्म करनेवालों के लिए यह पुल छोटा होता जाता है और नरक के मुंह की ओर ढकेल देता है।

यहूदी धर्म

एक अब्राहमिक धर्म होने के कारण यहूदी धर्म में भी मृत्यु पश्चात जीवन की धारणा पाई जाती है, पर बहुत अस्पष्ट रूप में, जो कि समय के साथ परिवर्तित होती रही है। प्राचीन यहूदी ग्रंथों के अनुसार, मृत्यु पश्चात सभी मृतक 'शेओल' नामी एक अन्धकार युक्त स्थान पर एकत्रित कर दिए जाते हैं। परन्तु समय के साथ इस आस्था में परिवर्तन आया और इसमें स्वर्ग और नरक की धारणा भी जुड़ गई, हालाँकि इसका विस्तृत विवरण कहीं उपलब्ध नहीं है। बाइबिल की पुस्तक डेनियल के इस पद्य में स्वर्ग और नरक की एक धूमिल सी छवि मिलती हैः

"धरती के वे असंख्य लोग जो मर चुके हैं और जिन्हें दफनाया जा चुका है, उठ खड़े होंगे और उनमें से कुछ अनन्त जीवन जीने के लिए उठ जायेंगे। किन्तु कुछ

इसलिये जागेंगे कि उन्हें कभी नहीं समाप्त होने वाली लज्जा और घृणा प्राप्त होगी।" (डेनियल 12:2)

यहूदियों में यह धारणा बहुत प्रचलित है कि वह ईश्वर के चहेते हैं और उनपर ईश्वर की विशेष कृपा है। इसी धारणा में यह बात भी जुड़ गई है कि स्वर्ग में प्रवेश का अधिकार सिर्फ यहूदियों को होगा और इसकी रचना तो उन्हीं के लिए की गई है।

ईसाई धर्म

ईसाई धर्म के अनुसार स्वर्ग जीवन के अन्त और इनसानों की समस्त लालसाओं की पूर्ति, सर्वोच्च और निश्चित खुशी की स्थिति का नाम है। इसकी प्राप्ति के लिए यीशु मसीह पर आस्था आवश्यक है।

1. "यीशु ने उससे कहा, मैं तुझसे सच कहता हूं, कि तू मेरे साथ स्वर्ग में रहेगा।" (ल्यूक 23:43)
2. "परन्तु जैसा लिखा है, कि जो आंख ने नहीं देखी, और कान ने नहीं सुना, और जो बातें मनुष्य के चित्त में नहीं चढ़ीं वे ही हैं, जो परमेश्वर ने अपने प्रेम रखनेवालों के लिये (स्वर्ग में) तैयार की हैं।" (कोरीन्थियंस 2:9)
3. "जिसके कान हों, वह सुन ले कि आत्मा कलीसियाओं से क्या कहता है : जो जय पाए, मैं उसे उस जीवन के पेड़ में से जो परमेश्वर के स्वर्गलोक में है, फल खाने को दूंगा।"(रेवेलेशन 2:7)

एक अब्राहमिक धर्म होने के कारण इसमें भी स्वर्ग के साथ नरक की धारणा भी पाई जाती है। मार्क (9:48) के अनुसार नरक वह स्थान है "जहाँ के कीटाणु कभी नहीं मरते और जहाँ की अग्नि कभी ठंडी नहीं होती।"

इस्लाम धर्म

इस्लाम में स्वर्ग (जन्नत) की धारणा बिलकुल स्पष्ट है और क़ुरआन व हदीस में इसका विस्तृत वर्णन मिलता है। इसके अनुसार स्वर्ग उस स्थान का नाम है जिसमें उन इनसानों को प्रवेश मिलेगा जो

कि आख़िरत में लगनेवाली अल्लाह की अदालत में सफल घोषित होंगे।

1. "जो लोग ईमान लाए और उन्होंने अच्छे कर्म किए उन्हें शुभ सूचना दे दो कि उनके लिए ऐसे बाग़ (जन्नत) हैं जिनके नीचे नहरें बह रहीं होंगी; जब भी उनमें से कोई फल उन्हें रोजी के रूप में मिलेगा, तो कहेंगे, यह तो वही है जो पहले हमें मिला था, और उन्हें मिलता-जुलता ही (फल) मिलेगा; उनके लिए वहाँ पाक-साफ़ जोड़े होंगे, और वे वहाँ सदैव रहेंगे।" (क़ुरआन 2:25)
2. "उच्च जन्नत में, जिसमें कोई व्यर्थ बात न सुनेंगे। उसमें स्रोत प्रवाहित होगा, उसमें ऊँची-ऊँची मसनदें होंगी, प्याले ढंग से रखे होंगे, क्रम से गाव तकिए लगे होंगे, और हर ओर क़ालीने बिछी होंगी।" (क़ुरआन 88:10-16)
3. "स्वर्ग में एक कमान के बराबर का हिस्सा उस सबसे बेहतर है जिनपर सूरज उगता है।" (हदीसः मिश्कात अल मसाबीह)
4. "जन्नत में रहनेवाले अपने ऊपर की जन्नत वालों को ऐसे देखेंगे जैसे तुम आसमान पर सितारों को देखते हो। (हदीसः बुखारी, मुस्लिम)

इस्लाम धर्म में नरक की धारणा भी स्वर्ग की धारणा की तरह बिलकुल स्पष्ट है। अल्लाह की अदालत में असफल होनेवालों का स्थान नरक (जहन्नम) होगा जहाँ वह सदा रहेंगे।

1. "और जिन लोगों ने इनकार किया और हमारी आयतों को झुठलाया, वही आग में पड़नेवाले हैं, वे उसमें सदैव रहेंगे।" (क़ुरआन 2:39)
2. जो कोई अल्लाह का साझी ठहराएगा, उसपर तो अल्लाह ने जन्नत हराम कर दी है और उसका ठिकाना आग है। अत्याचारियों का कोई सहायक नहीं।" (क़ुरआन 5:72)
3. अहले-किताब (यहूदी और ईसाई) और मुशरेकीन (बहुदेववादियों) में से जिन लोगों ने इनकार कर दिया है, वह यकीनन नरक की आग में जायेंगे। यह लोग सबसे बुरे प्राणी हैं। (क़ुरआन 98:6)

स्वर्ग और नरक कहाँ हैं?

स्वर्ग या नरक क्या वास्तव में कोई स्थान है या यह एक कल्पना मात्र है? कुछ लोगों का मानना है कि इनका कोई अस्तित्व नहीं है और लोगों के आचरण को पुण्य की ओर मोड़ने के लिए इसकी कल्पना को धर्म के माध्यम से प्रचारित कर दिया गया है। एक दूसरा वर्ग है जो कहता है कि स्वर्ग और नरक दोनों इसी धरती पर हैं। जिनका जीवन सुख और समृद्धि में व्यतीत होता है उनके लिए यही धरती स्वर्ग बन जाती है और जिनको सदैव कठिनाइयों का सामना रहता है उनके लिए यही धरती नरक का रूप धारण कर लेती है। एक तीसरा वर्ग भी है जो मानता है कि ईश्वर के इस असीमित और विशाल संसार में ही कहीं इनका अस्तित्व है और आख़िरत में उन्हें सामने ले आया जाएगा।

यह बात निश्चित रूप से कही जा सकती है कि इनसान इस विशाल संसार के बारे में बहुत कम जानकारी रखता है। कितना विस्तृत है? कितने सूर्य और गृह हैं? कितने सौर्यमंडल है? आदि प्रश्नों के उत्तर विज्ञान अभी भी देने की स्थिति में नहीं है। यह भी दावा नहीं किया जा सकता कि इनसान ने इस अत्यंत विशाल संसार के हर कोने की खोज कर ली है और वह निश्चित रूप से यह कह सकता है कि न कहीं स्वर्ग है, न नरक। अतः इस बात की सम्भावना से इनकार नहीं किया जा सकता कि, इनसानों के शोध से परे, इसी संसार में कहीं स्वर्ग और नरक का अस्तित्व हो। यह बात भी इनसान को स्वीकारनी होगी की इस अत्यंत विशाल और विस्तृत संसार में बहुत कुछ ऐसा अवश्य है जो अदृश्य है और इनसान की पहुँच से परे है, और सदा परे रहेगा। स्वर्ग और नरक संसार के उसी अदृश्य का एक हिस्सा हैं जिन तक इनसान किसी भी प्रयत्न से नहीं पहुँच सकता।

स्वर्ग और नरक के अस्तित्व का सत्यापन किसी वैज्ञानिक शोध अथवा प्रमाण से नहीं, बल्कि अल्लाह के इशदूतों के कथन से होता है, जिनके माध्यम से अल्लाह सदा अपना सन्देश इनसानों तक पहुंचाता रहा है। अल्लाह के अंतिम ईशदूत हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) ने बड़े विस्तार से, न सिर्फ स्वर्ग और नरक का विवरण प्रस्तुत किया, बल्कि यहाँ तक बता दिया कि वहां पर क्या सुविधाएँ या यातनाएं होंगी और किन कर्मों के आधार पर स्वर्ग और नरक का निर्णय होगा। हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) से पूर्व जितने भी ईशदूत आए हैं सभी ने लोगों को स्वर्ग की ख़ुशख़बरी दी है और नरक की यातनाओं से डराने का प्रयत्न किया है। अंतिम ईशग्रंथ क़ुरआन के अध्ययन से यह बात पूर्णरूप से स्पष्ट हो जाती है।

अल्लाह अपने ईशदूतों को परोक्ष का ज्ञान देकर भेजता था जिससे वह इनसानों के समक्ष उन तथ्यों को प्रस्तुत कर सकें जिनकी जानकारी का इनसानों के पास कोई अन्य स्रोत नहीं होता। इसी ज्ञान के आधार पर ईशदूत पूरे दृढ़ विश्वास के साथ लोगों के समक्ष इन तथ्यों को प्रस्तुत करते थे, जैसे वह स्वयं अपनी आँखों से देख रहे हों। स्वर्ग और नरक का ज्ञान भी इसी ईश-प्रदित ज्ञान का अंश है जो इनके अस्तित्व को प्रमाणित करता है।

स्वर्ग की कुछ झलकियाँ

इस्लाम स्वर्ग को एक ईश्वरीय साम्राज्य के रूप में प्रस्तुत करता है जहाँ इनसान आत्मा और शरीर दोनों के साथ प्रवेश पाएगा। वहां महल भी होंगे और बाग़ भी। वहां नदियाँ भी होंगी और पहाड़ भी। वहाँ इनसानों को वह कुछ प्राप्त होगा जिसे न कभी किसी आँख ने देखा होगा, न किसी कान ने सुना होगा और न ही किसी के मन में उनका ख़याल आया होगा।

स्वर्ग अनन्तकालीन सुख की प्राप्ति का स्थान है, समस्त इच्छाओं की पूर्ति का स्थान है और अपने मालिक, रचयिता और पालनहार अल्लाह-ईश्वर से निकटता का स्थान है। आइए इस्लाम में वर्णित स्वर्ग की कुछ झलकियाँ देखते हैं।

अल्लाह से मुलाक़ात

इस भौतिक संसार में यह संभव नहीं है कि इनसान अपने सृष्टा और रचयिता अल्लाह-ईश्वर को देख सके। न उसका कोई भौतिक रूप या आकार है, और न ही हमारी आँखों में उसको देखने की क्षमता। इनसानों और उनके रचयिता के बीच अदृश्यता का एक पर्दा है जिसके उस पार किसी भी प्रयत्न या उपकरण से नहीं देख सकता। क़ुरआन की शब्दावली में इसे 'ग़ैब' कहते हैं और इसपर आस्था रखना ईमान का अंश है। वास्तविकता तो यह है कि इस संसार में रहते हुए ग़ैब (अदृश्यता) में झाँकने का प्रयत्न करना व्यर्थ है। उसमें सफलता तो नहीं मिलेगी पर पथभ्रष्टता और पाप का भागी अवश्य बनना पड़ जाएगा।

दूसरी ओर यह भी सत्य है कि इनसानों के अन्दर अपने मालिक अल्लाह-ईश्वर के दर्शन की तीव्र इच्छा पाई जाती है और इसके लिए वह अनेको प्रयत्न करता रहता है। अल्लाह-ईश्वर का दर्शन न कभी

किसी को हुआ है, न कभी हो सकेगा। उसके दर्शन के जितने दावे भी किए गए हैं, सब मिथ्या हैं। क़ुरआन ने सदा के लिए यह स्पष्ट कर दिया है कि कोई इनसान उसको नहीं देख सकता।

> "निगाहें उसे नहीं पा सकतीं, बल्कि वही निगाहों को पा लेता है। वह अत्यन्त सूक्ष्म (एवं सूक्ष्मदर्शी) ख़बर रखनेवाला है।" (क़ुरआन 6:103)

अल्लाह-ईश्वर की यह महान अनुकम्पा है कि उसने स्वर्ग में जाने वालों से अपने दर्शन का वादा किया है। स्वर्ग में इनसानों के लिए सबसे बड़ा और सुखद इनाम और उपहार अल्लाह से मुलाकात के रूप में होगा।

> "लोगों ने हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) से प्रश्न किया, "क्या क़यामत के दिन हम अपने रब (अल्लाह) को देख सकेंगे?" उन्होंने उत्तर दिया, "क्या चौदहवीं का चाँद देखने में तुम्हें कठिनाई होती है?" लोगों ने कहा, "नहीं, या अल्लाह के रसूल (सल्ल॰)"। आपने फिर पूछा, "जब बादल न हों तब सूरज देखने में तुम्हें कोई कठिनाई होती है?" लोगों ने कहा, "नहीं"। तब आपने कहा, "फिर इसी तरह (बिना कठिनाई के) तुम (क़यामत के दिन) अपने रब का दर्शन कर सकोगे।" (हदीसः मुस्लिम)

जीवन में अच्छा कर्म करनेवालों को इनाम के रूप में अच्छे बदले का वादा करते हुए क़ुरआन में कहा गया है किः

> "अच्छे से अच्छा कर्म करनेवालों के लिए अच्छा बदला है और इसके अतिरिक्त और भी (अल्लाह के दर्शन और मुलाकात का सम्मान)।" (क़ुरआन 10:26)

एक इनसान के लिए इससे अधिक प्रसन्नता और प्रफुल्लता की बात क्या हो सकती है कि उसे अपने प्रभु और पालनहार से मुलाक़ात का अवसर प्रदान कर दिया जाए। कौन होगा जो अपनी दृष्टि उधर से हटाना चाहेगा? इसी दृश्य को शब्दों में प्रस्तुत करते हुए क़ुरआन कहता है :

"कितने ही चेहरे उस दिन तरो ताजा और प्रफुल्लित होंगे, अपने रब की ओर देख रहे होंगे।" (क़ुरआन 75:22-23)

अल्लाह से इस मुलाक़ात के इच्छुक से क़ुरआन आह्वान करता है कि इसकी तैयारी उसे इसी जीवन में करनी होगी। इसके लिए क़ुरआन ने दो-सूत्रीय एजेंडा दिया हैः पहला अच्छा कर्म और दूसरा किसी को उसका साझी न बनाना।

"कह दो, ''मैं तो केवल तुम्हीं जैसा मनुष्य हूँ। मेरी ओर प्रकाशना की जाती है कि तुम्हारा पूज्य-प्रभु बस अकेला पूज्य-प्रभु है। अतः जो कोई अपने रब से मिलन की आशा रखता हो, उसे चाहिए कि अच्छा कर्म करे और अपने रब की बन्दगी में किसी को साझी न बनाए।"

(क़ुरआन 18:110)

स्वर्ग में अल्लाह की प्रसन्नता की प्राप्ति होगी

अल्लाह की जिस प्रसन्नता, कृपा और अनुकम्पा की प्राप्ति के लिए इनसान पूरा जीवन परिश्रम करता रहता है, उसकी प्राप्ति स्वर्ग में ही संभव है।

1) उसकी प्रसन्नता की प्राप्ति ही इनसान की सबसे बड़ी सफलता है।

"इन ईमान वाले मर्दों और ईमान वाली औरतों से अल्लाह का वादा है कि उन्हें ऐसे बाग़ देगा जिनके नीचे नहरें बहती होंगी और वे हमेशा उनमें रहेंगे। उन सदाबहार बाग़ों में उनके लिए पाकीज़ा ठहरने की जगहे होंगी, और सबसे बढ़कर यह कि अल्लाह की प्रसन्नता उन्हें प्राप्त होगी। यही बड़ी सफलता है। (क़ुरआन 9:72)

2) स्वर्ग में अल्लाह कभी उनसे अप्रसन्न नहीं होगा।

"अल्लाह स्वर्ग के लोगों से प्रश्न करेगा कि क्या तुम प्रसन्न हो? वह उत्तर देंगे कि, 'ऐ हमारे रब, हम आपसे प्रसन्न क्यों न होंगे जबकि आपने हमको वो कुछ प्रदान किया है

जो किसी को नहीं दिया।' अल्लाह कहेगा कि 'क्या मैं तुम्हें इससे उत्तम चीज़ न प्रदान करूँ?' स्वर्ग वाले पूछेंगे कि 'ऐ अल्लाह, इससे उत्तम और क्या हो सकता है?' तब अल्लाह घोषणा करेगा कि 'मैं तुम्हें अपनी प्रसन्नता और कृपा प्रदान कर रहा हूँ। आज के उपरान्त मैं तुमसे कभी अप्रसन्न नहीं होऊंगा।" (हदीस : मुस्लिम)

स्वर्ग सदा रहने का स्थान है

1) क्षमादान के साथ स्वर्ग में सदा रहने का अवसर मिलेगा। स्वर्ग का जीवन अनन्तकालीन होगा और वहां किसी को मृत्यु नहीं आएगी।

"उनका बदला उनके रब की ओर से क्षमादान है और ऐसे बाग़ हैं जिनके नीचे नहरें बहती होंगी। उनमें वे सदैव रहेंगे। और क्या ही अच्छा बदला है अच्छे कर्म करनेवालों का।"

(क़ुरआन 3:136)

2) स्वर्ग से कोई कभी निकलने की इच्छा नहीं करेगा।

"जिनमें (स्वर्ग) वे सदैव रहेंगे, वहाँ से हटना न चाहेंगे।"

(क़ुरआन 18:108)

स्वर्ग अत्यंत विशाल है

स्वर्ग की विशालता का वर्णन करते हुए क़ुरआन बताता है कि यह पृथ्वी और आकाश जैसा विशाल है। जिस प्रकार आकाश की विशालता का अनुमान लगाना असंभव है, उसी प्रकार स्वर्ग की विशालता का अनुमान भी नहीं लगाया जा सकता।

"और अपने रब की क्षमा और उस जन्नत की ओर बढ़ो, जिसका विस्तार आकाशों और धरती जैसा है। वह उन लोगों के लिए तैयार की गई है जो डर रखते हैं।"

(क़ुरआन 3:133)

क़ुरआन में एक दुसरे स्थान पर भी जन्नत की विशालता और

विस्तार का वर्णन इन शब्दों में आया है।

"अपने रब की क्षमा और उस जन्नत की ओर अग्रसर होने में एक-दूसरे से बाज़ी ले जाओ, जिसका विस्तार आकाश और धरती के विस्तार जैसा है, जो उन लोगों के लिए तैयार की गई है जो अल्लाह और उसके रसूलों पर ईमान लाए हों।" (क़ुरआन 57:21)

क़ुरआन के इन शब्दों से यह बात स्पष्ट हो जाती है कि जीवन की सफलता अर्थात स्वर्ग में प्रवेश के लिए मात्र ईश्वर पर आस्था काफी नहीं है। इसके लिए उसके पैग़म्बरों (ईशदूतों) पर आस्था भी आवश्यक है। साथ ही यह भी आवश्यक है कि उसकी ओर से अवतरित सभी ईशदूतों को स्वीकार किया जाए और सभी पर आस्था रखी जाए। हज़रत आदम (अलै॰) संसार के पहले इनसान भी थे और ईशदूत भी। हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) अंतिम ईशदूत थे। इस्लाम की धारणा है कि अल्लाह-ईश्वर ने इनसानों के मार्गदर्शन और उन्हें नरक से बचाने के लिए एक लाख चौबीस हज़ार पैग़म्बर अवतरित किए थे।

स्वर्ग की श्रेणियाँ

अच्छे कर्म करनेवालों को स्वर्ग में स्थान अवश्य मिलेगा, यह अल्लाह का वादा है और अल्लाह का वादा कभी झूठा नहीं हो सकता। पर यह भी सत्य है कि उनके कर्मों के अनुसार स्वर्ग में उनकी श्रेणी अलग-अलग होगी।

"देखो, कैसे हमने उनके कुछ लोगों को कुछ के मुक़ाबले में आगे रखा है! और आख़िरत दर्जों की दृष्टि से सबसे बढ़कर है और श्रेष्ठता की दृष्टि से भी वह सबसे बढ़-चढ़कर है।" (क़ुरआन 17:21)

क़ुरआन और हदीस की व्याख्या अनुसार कुछ लोगों का मानना है कि स्वर्ग की सात श्रेणियां हैं, कुछ आठ कहते हैं और कुछ नौ। नौ श्रेणी माननेवालों ने उनके नाम इस प्रकार बताए हैं :

जन्नत-उल-फ़िरदौस, जन्नत-उल-आलियाह, जन्नत-उल-अदन,

जन्नत-उल-ख़ुल्द, जन्नत-उल-माअवा, जन्नत-उन-नईम,
दार-उल-मक़ाम, दार-उस-सलाम, इल्लियून

ऐसा माना जाता है कि जन्नत-उल-फ़िरदौस का स्थान सबसे उच्चतम श्रेणी में आता है। हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) ने कहा है कि तुम अल्लाह से जब भी कुछ मांगो, जन्नत-उल-फ़िरदौस माँगा करो (हदीस बुख़ारी 2790)। स्वर्ग की इन सभी श्रेणियों में आपस में अन्तर होगा उनमें स्थान पानेवालों के कर्मों के अनुसार। एक-दुसरे से अलग और बहुत दूर होने के उपरान्त भी इन श्रेणियों के वासी एक-दुसरे को आसानी से देख सकेंगे।

"उच्च श्रेणी वाले अपने नीचे वालों को वैसे ही देख सकेंगे जैसे दूर आकाश पर दिखाई देनेवाले सितारे।"

(हदीस : तिरमिज़ी 3658)

स्वर्ग की इन श्रेणियों में से प्रत्येक में भी अलग-अलग स्तर होंगे। विभिन्न श्रेणियों और उनके स्तरों को मिलाकर स्वर्ग में अनेकों दर्जे होने की बात सामने आती है। एक हदीस में हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) ने बताया है कि स्वर्ग में सौ दर्जे हैं जिन्हें अल्लाह ने अपने मार्ग में संघर्ष करनेवालों के लिए आरक्षित कर रखा है। (बुख़ारी 2790)

"स्वर्ग के सौ स्तर हैं। इनमें से प्रत्येक तल से दुसरे तल के बीच सौ वर्षों का फासला है और फ़िरदौस उनमें से सबसे ऊँचे स्तर पर है और उससे चार नदियाँ निकलती हैं और उसके ऊपर सिंहासन है।" (हदीस : तिरमिज़ी)

स्वर्ग के प्रवेशद्वार

स्वर्ग में अनेकों प्रवेशद्वार हैं। इनके अस्तित्व का प्रमाण क़ुरआन में इस प्रकार आया हैः

"और जो लोग अपने रब का डर रखते थे, वे गरोह के गरोह जन्नत की ओर ले जाए जाएँगे, यहाँ तक कि जब वे वहाँ पहुँचेंगे इस हाल में कि उसके द्वार खुले होंगे। और उसके प्रहरी उनसे कहेंगे, ''सलाम हो तुमपर! बहुत अच्छे

> रहे! अतः इसमें प्रवेश करो सदैव रहने के लिए तो (उनकी खुशियों का क्या हाल होगा!)।" (क़ुरआन 39:73)

क़ुरआन के अध्ययन से यह सत्य भी स्पष्ट होता है कि जो लोग अल्लाह की निशानियों का इनकार करते हैं, स्वयं पर गर्व करते और उद्दंडतापूर्ण जीवन व्यतीत करते हैं, उनके लिए स्वर्ग के द्वार किसी क़ीमत पर भी नहीं खोले जाएंगे। अर्थात उनका ठिकाना नरक होगा।

> "जिन लोगों ने हमारी आयतों को झुठलाया और उनके मुक़ाबले में अकड़ दिखाई, उनके लिए आकाश के द्वार नहीं खोले जाएँगे और न वे जन्नत में प्रवेश करेंगे जब तक कि ऊँट सुई के नाके में से न गुज़र जाए। हम अपराधियों को ऐसा ही बदला देते हैं।" (क़ुरआन 7:40)

हदीसों के अनुसार स्वर्ग के आठ प्रवेशद्वार हैं, जिनके नाम इस प्रकार हैं :

1. बाब-उस-सलाह : इसके नाम से ही स्पष्ट हो जाता है कि इस द्वार से उन लोगों को प्रवेश मिलेगा जो पूरे जीवन निरंतर अपनी नमाजों की रक्षा करते रहे थे।
2. बाब-उल-जिहाद : जिन लोगों ने अल्लाह के दीन को फैलाने और उसको स्थापित करने के संघर्ष में भाग लिया होगा, उनको इस द्वार से प्रवेश कराया जाएगा।
3. बाब-उस-सदक़ा : जो अपने जीवन भर समय-समय पर सदका देते रहे, उनको इस विशेष द्वार से प्रवेश करने को आमंत्रित किया जाएगा।
4. बाब-उर-रय्यान : यह विशेष द्वार उन लोगों के लिए खोला जाएगा, जिन्होंने बड़ी प्रतिबद्धता से रोज़ा रखा होगा।
5. बाब-उल-हज : जिन लोगों ने अल्लाह की ओर से अनिवार्य किए गए हज के कर्तव्य को पूरा किया होगा, उनको इस द्वार से प्रवेश का सौभाग्य प्राप्त होगा।
6. बाब-उल-क़ाज़ीमिनल-ग़ैज़-वल-आफ़ीना-अनिन-नासः यह प्रवेशद्वार विशेषरूप से उन लोगों के लिए है जो अपने क्रोध पर नियंत्रण

रखते थे और दूसरों को क्षमा कर देते थे।

7. बाब-उल-ऐमनः इस द्वार से वह सौभाग्यशाली प्रवेश पाएंगे जिनका हिसाब-किताब नहीं होना है।
8. बाब-उज-ज़िक्रः अपने जीवन में जो लोग अल्लाह को बहुत याद करते थे, वह इससे प्रवेश पाएंगे।

वहां का मौसम अत्यंत सुखद और सुहावना होगा

स्वर्ग में न अत्यंत तीव्र गर्मी का सामना करना पड़ेगा, न सर्दी का। वहां का मौसम पृथ्वी के मौसम से भिन्न, अत्यंत सुखद और सुहावना होगा। लोग सदा और अनंतकाल तक उसका आनंद ले सकेंगे।

> "उसमें वे तख़्तों पर टेक लगाए होंगे, वे उसमें न तो सख़्त धूप देखेंगे और न सख़्त ठंड।" (क़ुरआन 76:13)

बड़े-बड़े बाग़ होंगे जिनके नीचे नहरें बहती होंगी

अरबी भाषा में स्वर्ग को जन्नत कहते हैं जिसका अर्थ ही होता है बाग। क़ुरआन में विभिन्न स्थानों पर स्वर्ग का वर्णन बाग़ के रूप में ही किया गया है। ऐसा बाग़ जिसमें विभिन्न प्रकार की नहरें बहती होंगी।

> "और जो लोग ईमान लाए और उन्होंने अच्छे कर्म किए, उन्हें हम ऐसे बाग़ों में दाख़िल करेंगे, जिनके नीचे नहरें बह रही होंगी, जहाँ वे सदैव रहेंगे।" (क़ुरआन 4:57)
>
> "ईमान लाने वाले मर्दों और ईमान लानेवाली औरतों से अल्लाह ने ऐसे बाग़ों का वादा किया है जिनके नीचे नहरें बह रही होंगी, जिनमें वे सदैव रहेंगे और सदाबहार बाग़ों में पवित्र निवास गृहों का (भी वादा है) और, अल्लाह की प्रसन्नता और रज़ामन्दी का; जो सबसे बढ़कर है। यही सबसे बड़ी सफलता है।" (क़ुरआन 9:71)
>
> "डर रखने वालों के लिए जिस जन्नत का वादा है, उसकी

शान यह है कि उसके नीचे नहरें बह रही हैं, उसके फल शाश्वत हैं और इसी प्रकार उसकी छाया भी।"

(क़ुरआन 13:35)

स्वर्ग की नहरें

पानी की नहरों से तो इनसान भलीभांति अवगत है पर दूध और शहद की नहरों की वह कभी कल्पना भी नहीं कर सकता। पर स्वर्ग में यह सच साबित हो जाएगा। क़ुरआन में एक स्थान पर वहां की नहरों का वर्णन कुछ इस प्रकार आया है।

"उस जन्नत की शान, जिसका वादा डर रखनेवालों से किया गया है, यह है कि उसमें ऐसे पानी की नहरें होंगी जो प्रदूषित नहीं होता। और ऐसे दूध की नहरें होंगी जिसके स्वाद में तनिक भी अन्तर न आया होगा, और ऐसे पेय की नहरें होंगी जो पीनेवालों के लिए मज़ा-ही-मज़ा होंगी, और साफ़-सुथरे शहद की नहरें भी होंगी।" (क़ुरआन 47:15)

इसमें पानी, दूध और शहद की नहरों के अतिरिक्त अन्य पेय की नहरों की बात भी बताई गई है। इनका नाम नहीं बताया गया है क्योंकि इनसान उसको समझ नहीं पायेगा।

"स्वर्ग की एक नहर का नाम 'कौसर' होगा जिसका पानी दूध से भी अधिक सफ़ेद और शहद से भी अधिक मीठा होगा।" (हदीस : तिरमिज़ी)

"स्वर्ग का हर निवासी इन नहरों से छोटी-छोटी नहरें निकाल कर अपने महल तक ले जा सकेगा।" (हदीस : तिरमिजी)

यह कहना गलत नहीं होगा कि जन्नत में बाग़ों और नहरों के इन्हीं वर्णन से प्रभावित होकर इनसानों ने अपने लिए बड़े-बड़े भव्य महल बनवाए और उनमें नहरों के बहने की व्यवस्था भी की। अनेकों राजा- महाराजा के महलों में स्वर्ग के इस दृश्य को पृथ्वी पर स्थापित करने की कोशिश की गई है।

स्वर्ग में रहने का स्थान

स्वर्ग में प्रवेश पानेवाले भाग्यशाली लोगों को, उनके अच्छे कर्मों के फलस्वरूप, उच्चकोटि के महलों में रखा जाएगा। यह महल बड़े-बड़े बाग़ों में होंगे जिनमें नहरें बह रही होंगी।

> ''अल्लाह ने ऐसे बाग़ों का वादा किया है जिनके नीचे नहरें बह रही होंगी, जिनमें वे सदैव रहेंगे और सदाबहार बाग़ों में पवित्र निवास गृहों का (भी वादा हैं) ।" (क़ुरआन 9:72)

यह महल सोने और चांदी की ईंटों से बने होंगे और इनमें उपयोग किए जानेवाली समस्त वस्तुएं भी सोने और चांदी की होंगी। इन महलों में बड़े-बड़े गुम्बद होंगे जो अत्यन्त सुन्दर मोतियों से बने होंगे।

> "उनके बर्तन सोने के होंगे और उनके कंघे सोने और चांदी के और उनके पसीनों से कस्तूरी जैसी सुगंध आएगी।"
>
> (हदीसः बुख़ारी)

वृक्ष जिन पर फल लटकते होंगे

यह बात पूर्व में कही जा चुकी है कि स्वर्ग (जन्नत) के अर्थ में ही बाग़ों की कल्पना शामिल है। क़ुरआन में स्वर्ग में पाए जानेवाले अनेकों वृक्षों का वर्णन मिलता है, जिसमें खजूर, अनार और अंगूर का वर्णन सबसे अधिक मिलता है।

> "उनमें भरपूर फल और खजूरें और अनार (होंगे)। अपने रब के किन-किन इनामों को तुम झुठलाओगे?"
>
> (क़ुरआन 55:68-69)

> "यकीनन डर रखनेवालों के लिए सफलता का एक स्थान है, बाग़ और अंगूर।" (क़ुरआन 78:31-32)

क़ुरआन के अध्ययन से यह भी ज्ञात होता है कि वहां केला, जैतून और बेरी के वृक्ष भी होंगे। यह सभी वृक्ष लम्बी-लम्बी घनी झाड़ियों वाले और बग़ैर कांटों के होंगे जो सदैव हरे-भरे रहेंगे और सदा फल देते रहेंगे।

"और हर उस व्यक्ति के लिए जो अपने रब के सामने पेश होने से डरता हो, दो बाग़ हैं। अपने रब के किन-किन इनामों को तुम झुठलाओगे? हरी-भरी डालियों से भरपूर।"
(क़ुरआन 55:46-48)

स्वर्ग के इन वृक्षों पर पाए जानेवाले फलों की मात्रा असीमित होगी और कभी समाप्त नहीं होगी। इन फलों का सम्बन्ध किसी मौसम से न होगा बल्कि यह तो सदाबहार वृक्षों पर सदा उपलब्ध रहेंगे। न कभी सड़ेंगे, न ख़राब होंगे। स्वर्ग के सौभाग्यशाली निवासियों को उन फलों को ख़रीदने की आवश्यकता नहीं होगी बल्कि उन्हें पूरा अधिकार होगा कि जब चाहें इनसे लाभ उठाएं।

"रहे सौभाग्यशाली लोग, तो सौभाग्यशालियों का क्या कहना! वे वहाँ होंगे जहाँ बिन काँटों के बेर होंगे; और गुच्छेदार केले; दूर तक फैली हुई छाँव; बहता हुआ पानी; बहुत-सा स्वादिष्ट फल, जिसका सिलसिला टूटनेवाला न होगा और न उसपर कोई रोक-टोक होगी, उच्चकोटि के बिछौने होंगे।" (क़ुरआन 56:27-34)

"निस्संदेह डर रखनेवाले छाँवों और स्रोतों में हैं, और उन फलों के बीच जो वे चाहें। खाओ-पियो मज़े से, उन कर्मों के बदले में जो तुम करते रहे हो। निश्चय ही उत्तमकारों को हम ऐसा ही बदला देते हैं।" (क़ुरआन 77:41-44)

"और उस (बाग़) के साए उनपर झुके होंगे और उसके फलों के गुच्छे बिलकुल उनके वश में होंगे (कि जिस समय और जिस तरह चाहें उन्हें तोड़ लें)।" (क़ुरआन 76:14)

स्वर्ग के वृक्षों के फल स्वर्गवासियों के लिए जाने-पहचाने होंगे, बिलकुल वैसे जैसे वह दुनिया में खाया करते थे। पर उनका स्वाद अनोखा होगा, जैसा पहले कभी सेवन नहीं किया होगा।

"उनके लिए ऐसे बाग़ हैं जिनके नीचे नहरें बह रही होंगी; जब भी उनमें से कोई फल उन्हें रोज़ी के रूप में मिलेगा, तो कहेंगे, ''यह तो वही है जो पहले हमें मिला था" और

उन्हें मिलता-जुलता ही (फल) मिलेगा।" (क़ुरआन 2:25)

स्वर्ग के वृक्ष की एक विशेषता यह भी होगी कि वह घनी छांव प्रदान करनेवाले होंगे। इनमें से कुछ वृक्ष तो अत्यंत विशाल होंगे। इतने विशाल कि इनसान उसकी कल्पना भी नहीं कर सकता।

"वास्तव में स्वर्ग में एक वृक्ष ऐसा भी है जो इतना विशाल होगा कि एक छांव में एक सवार सौ साल तक यात्र कर सकता है पर उसका अंत नहीं आएगा।"

(हदीस मुस्लिम 2826)

खाने-पीने के लिए वहां सब कुछ होगा

क़ुरआन और हदीस के अध्ययन से ज्ञात होता है कि स्वर्ग में स्थान पानेवालों की शान निराली होगी। वहां न सिर्फ उनकी हर इच्छा की पूर्ति होगी, बल्कि खान-पान के लिए फलों के अतिरिक्त भी बहुत कुछ होगा। बर्तन सोने-चांदी के होंगे, खाने-पीने में फलों के अतिरिक्त पक्षियों के मांस भी उनके सामने पेश किए जाएंगे और वह सब कुछ होगा जो उनके दिलों को भाए और जिसको देखकर उनकी आँखें प्रसन्नता से भर उठें।

"उनके आगे सोने की तशतरियाँ और प्याले गर्दिश करेंगे और वहाँ वह सब कुछ होगा, जो दिलों को भाए और आँखें जिससे लज़्ज़त पाएँ। ''और तुम उसमें सदैव रहोगे।"

(क़ुरआन 43:71)

"और स्वादिष्ट फल जो वे पसन्द करें; और पक्षी का मांस जो वे चाहें......" (क़ुरआन 56:20-21)

स्वर्ग में ईश्वर अल्लाह की अनुकम्पाओं का सेवन करने में किसी को कोई संकोच न हो, इसलिए अल्लाह की ओर से घोषणा की जाएगी कि जीवन में अपने अच्छे कर्मों के बदले अब तुम यहाँ जो चाहो खाओ और पियो।

"मज़े से खाओ और पियो उन कर्मों के बदले में जो तुमने बीते दिनों में किए हैं।" (क़ुरआन 69:24)

क़ुरआन के अध्याय नंबर 76 में स्वर्ग का एक बड़ा ही आकर्षक दृश्य प्रस्तुत किया गया है जिसमें वहां की व्यवस्था की शान के साथ ही स्वर्ग में प्रवेश पानेवाले सौभाग्यशालियों के खाने पीने की अद्‌भुत व्यवस्था भी दर्शाई गई है।

> "उसमें वे तख़्तों पर टेक लगाए होंगे, वे उसमें न तो सख़्त धूप देखेंगे और न सख़्त ठंड। और उस (बाग़) के साए उनपर झुके होंगे और उसके फलों के गुच्छे बिलकुल उनके वश में होंगे। और उनके पास चाँदी के बरतन गर्दिश में होंगे और प्याले जो बिल्कुल शीशे हो रहे होंगे, शीशे भी चाँदी के जो ठीक अन्दाजे करके रखे गए होंगे और वहाँ वे एक और जाम पिएँगे जिसमें सोंठ का मिश्रण होगा। क्या कहना उस स्रोत का जो उसमें होगा, जिसका नाम सल-सबील है। उनकी सेवा में ऐसे किशोर दौड़ते रहे होंगे जो सदैव किशोर ही रहेंगे। जब तुम उन्हें देखोगे तो समझोगे कि बिख़रे हुए मोती हैं। जब तुम वहाँ देखोगे तो तुम्हें बड़ी नेमत और विशाल राज्य दिखाई देगा।"
>
> (क़ुरआन 76:13-20)

क़ुरआन की यह आयतें स्वर्ग का चित्रण एक अत्यंत विशाल राज्य के रूप में करती हैं जिसमें प्रवेश पानेवाले सौभाग्यशालियों को वहां अपने जीवन-यापन के लिए कोई प्रयत्न नहीं करना होगा, न कहीं भाग-दौड़ करनी होगी, बल्कि वहां सबकुछ आसानी से बग़ैर प्रयत्न के उपलब्ध कराया जाएगा। उनकी सेवा में कुछ किशोर लगे होंगे जो इनकी समस्त आवश्यकताओं की पूर्ति को तत्पर रहेंगे। लोग ऊँची-ऊँची मसनदों पर तकिये लगाए बैठे होंगे और उनके समक्ष हर प्रकार के मेवे और पेय प्रस्तुत किए जाएंगे। ऐसे पेय जिनमें न ख़ुमार होगा न वह मदहोश करेंगे। वह पेय विशुद्ध होगा और उसमें मुश्क की ख़ुशबु मिली होगी।

> "वे तकिया लगाए हुए होंगे। वहाँ वे बहुत-से मेवे और पेय मँगवाते होंगे।" (क़ुरआन 38:51)

"और वे नेमत भरी जन्नतों में सम्मानपूर्वक होंगे, तख़्तों पर आमने-सामने विराजमान होंगे; उनके बीच विशुद्ध पेय का पात्र फिराया जाएगा, बिलकुल साफ़, उज्जवल, पीनेवालों के लिए सर्वथा सुस्वादु। न उसमें कोई ख़ुमार होगा और न वे उससे निढाल और मदहोश होंगे।" (क़ुरआन 37:43-47)

"उन्हें मुहरबंद विशुद्ध पेय पिलाया जाएगा, मुहर उसकी मुश्क की होगी - जो लोग दूसरों पर बाज़ी ले जाना चाहते हों वे इस चीज को प्राप्त करने में बाजी ले जाने का प्रयास करें और उसमें 'तसनीम' का मिश्रण होगा, हाल यह है कि वह एक स्रोत है, जिसपर बैठकर सामीप्य प्राप्त लोग पिएँगे।" (क़ुरआन 83:25-28)

स्वर्ग में लोगों के वस्त्र

स्वर्ग में प्रवेश पानेवालों के वस्त्र अत्यंत विशिष्ट और सुशोभित करनेवाले होंगे जो बारीक रेशम के भी होंगे और अतलस, दीबा, सुनदुस और इसतबरक के भी। इतना ही नहीं, इन अत्यंत क़ीमती वस्त्रों के साथ ही उनको हीरे, मोती और सोने के आभूषण भी पहनाए जाएंगे।

"वहाँ उन्हें सोने के कंगन पहनाए जाएँगे और वे हरे पतले और गाढ़े रेशमी कपड़े पहनेंगे और ऊँचे तख़्तों पर तकिया लगाए होंगे। क्या ही अच्छा बदला है और क्या ही अच्छा विश्रामस्थल!" (क़ुरआन 18:31)

"वहाँ वे सोने के कंगनों और मोती से आभूषित किए जाएँगे और वहाँ उनका परिधान रेशमी होगा।" (क़ुरआन 22:23)

"वहाँ उन्हें सोने के कंगनों और मोती से आभूषित किया जाएगा। और वहाँ उनका वस्त्र रेशम होगा।" (क़ुरआन 35:33)

"उनके ऊपर हरे बारीक रेशमी वस्त्र और गाढ़े रेशमी कपड़े

होंगे, और उन्हें चाँदी के कंगन पहनाए जाएँगे और उनका रब उन्हें पवित्र पेय पिलाएगा।" (क़ुरआन 76:21)

हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) ने इन लोगों के बारे में यह भी बताया है कि स्वर्ग में प्रवेश पानेवालों के कपड़े न कभी ख़राब होंगे और न उनकी जवानी कभी मिटेगी।

"धन्य हैं स्वर्ग में प्रवेश पानेवाले, वह कभी दुखी नहीं होंगे, न उनके वस्त्र कभी ख़राब होंगे और न उनकी जवानी कभी मिटेगी। (हदीसः मुस्लिम 2836)

स्वर्ग में जानेवाली स्त्रियाँ

सांसारिक जीवन की तरह स्वर्ग का जीवन भी स्त्रियों से मिलकर ही पूर्ण होगा। वहां भी अल्लाह हर किसी के लिए जोड़ों की व्यवस्था करेगा जिसके साथ मिलकर एक अत्यंत सुखी जीवन व्यतीत करने का अवसर मिलेगा।

"निश्चय ही जन्नतवाले आज किसी-न-किसी काम में व्यस्त आनन्द ले रहे हैं। वे और उनकी पत्नियाँ छायों में मसहरियों पर तकिया लगाए हुए हैं, उनके लिए वहाँ मेवे हैं। और उनके लिए वह सब कुछ मौजूद है, जिसकी वे माँग करें।" (क़ुरआन 36:55-57)

ऐसे पति-पत्नी जिन दोनों को स्वर्ग में प्रवेश का सौभाग्य प्राप्त होता है, एक साथ मिला दिया जाएगा और फिर सदा एक-दुसरे के साथ रहेंगे।

"दाख़िल हो जाओ जन्नत में तुम और तुम्हारी पत्नियाँ, तुम्हें ख़ुश कर दिया जाएगा।" (क़ुरआन 43:70)

स्वर्ग की स्त्रियाँ सुन्दरता और कोमलता में अद्‌भुत होंगी। वह हर प्रकार से पाक और स्वच्छ होंगी और अपने पति से बहुत अधिक प्रेम करनेवाली होंगी।

"उनमें भली और सुन्दर स्त्रियाँ होंगी। तो तुम दोनों अपने रब की अनुकम्पाओं में से किस-किस को झुठलाओगे?

अप्सराएँ (परम रूपवती स्त्रियाँ) ख़ेमों में रहनेवाली।"

(क़ुरआन 55:70-72)

"उनके लिए वहां पाकीजा पत्नियाँ होंगी, और वे वहां सदैव ही रहेंगे।" (क़ुरआन 2:25)

यह बात स्पष्ट कर देना आवश्यक है कि स्वर्ग में स्त्री और पुरुष दोनों को बराबर का अधिकार होगा और उनमें कोई भेद-भाव नहीं होगा। स्वर्ग में अल्लाह की जिन अनुकम्पाओं का वर्णन किया गया है, उससे लाभान्वित होने का अधिकार स्त्री और पुरुष दोनों को समान होगा। अल्लाह ने इस सांसारिक जीवन में भी हर प्रकार के लिंग-भेद को पाप की श्रेणी में दाख़िल किया है, इसलिए स्वर्ग में लिंग के आधार पर किसी भेद-भाव की कोई सम्भावना उत्पन्न ही नहीं होती। क़ुरआन के अध्ययन से यह बात भी सामने आती है कि स्वर्ग में प्रवेश पानेवाली महिलाओं को अल्लाह कुंवारी युवती का रूप प्रदान कर देगा, जो अपने पति से अत्यंत प्रेम करनेवाली होंगी।

"(और वहाँ उनकी पत्नियों को) निश्चय ही हमने एक विशेष उठान पर उठाया। और हमने उन्हे कुँवारियाँ बनाया; प्रेम दर्शानेवाली और समायु, सौभाग्यशाली लोगों के लिए।"

(क़ुरआन 56:35-38)

स्वर्ग की हूरें

हूरें एक अनूठी सृष्टि हैं, जिन्हें अल्लाह ने अपनी असीम कृपा से विशेष रूप से स्वर्ग में स्थान पानेवालों के लिए बनाया है। वह संसार की स्त्रियों से भिन्न हैं, उनकी सुन्दरता अतुल्य, अत्युत्तम और अद्वितीय हैं, जिन्हें कभी किसी ने नहीं देखा और न कल्पना की है। उनकी सुन्दरता को शब्दों में व्यक्त करना संभव नहीं है, इसीलिए संसार में पाई जानेवाली अत्यंत कीमती और सुन्दर वस्तुओं से तुलना करके उनकी सुन्दरता व्यक्त करने का प्रयत्न किया गया है।

"उन (अनुकम्पाओं) में निगाह बचाए रखनेवाली (सुन्दर) स्त्रियाँ (हूरें) होंगी, जिन्हें उनसे पहले न किसी मनुष्य ने

हाथ लगाया होगा और न किसी जिन्न ने। फिर तुम दोनों अपने रब की अनुकम्पाओं में से किस-किस को झुठलाओगे? मानो वे लाल (याक़ूत) और प्रवाल (मूँगा) हैं।
(क़ुरआन 55:56-58)

स्वर्ग की अनगिनत और असीमित अनुकम्पाओं में से एक यह है कि अल्लाह अपनी असीम कृपा से स्वर्ग में स्थान पानेवालों का विवाह इन्हीं हूरों से कर देगा और वह उनके साथ अत्यंत सुखमय जीवन व्यतीत करेंगे।

"मज़े से खाओ और पियो उन कर्मों के बदले में जो तुम करते रहे हो। पंक्तिबद्ध तख़्तों पर तकिया लगाए हुए होंगे और हम बड़ी आँखोंवाली हूरों (परम रूपवती स्त्रियों) से उनका विवाह कर देंगे। (क़ुरआन 52:19-20)

हूरों की सुन्दरता के सम्बन्ध में यह भी बताया गया है कि वह बड़ी-बड़ी और काली आँखोंवाली होंगी, अत्यंत शर्मीली, जिन्हें कभी किसी ने छुआ तक नहीं होगा। अल्लाह ने अपनी असीमित शक्ति से उनके शरीर को इतना पारदर्शक बनाया है कि उनकी हड्डियों के अन्दर, उनके अस्थि-मज्जा (bone marro) तक स्पष्ट नजर आएगा।

"और बड़ी आँखों वाली हूरें, मानो छिपाए हुए मोती हों। यह सब उसके बदले में उन्हें प्राप्त होगा जो कुछ वे करते रहे।" (क़ुरआन 56:22-24)

"हर एक की दो पत्नियाँ होंगी, (जो इतनी सुंदर, शुद्ध और पारदर्शी होंगी कि) उनके पैरों की हड्डियों का मज्जा तक देखा जाएगा।" (हदीस बुख़ारी 3254)

उनकी सुन्दरता का अनुमान लगाने के लिए यह भी बताया गया है कि उन हूरों में कोई एक भी यदि इस धरती पर प्रकट हो जाए तो पृथ्वी और आकाश के मध्य में सबकुछ उसके प्रकाश और सुगंध से भर जाएगा। और उन हूरों का हिजाब इतना मूल्यवान होगा की वह दुनिया और इसमें पाई जानेवाली समस्त वस्तुओं से बेहतर होगा।

"और यदि स्वर्ग से कोई हूर धरती के लोगों के मध्य प्रकट

> हो जाए, तो वह पृथ्वी और आकाश के मध्य के समस्त स्थान को प्रकाश और सुगंध से भर देगी और उसका हिजाब संसार और उसमें पाई जानेवाली समस्त वस्तुओं से बेहतर है।" (हदीस बुख़ारी 2796)

वैसे तो अल्लाह ने स्वर्ग में स्थान पानेवाले हर व्यक्ति का विवाह हूरों से कराने का वादा किया है, पर अल्लाह ने विशेष वादा उन लोगों से किया है जो अपने ग़ुस्से को नियंत्रण में रखते हैं।

> "जो कोई बदला लेने की क्षमता होने के उपरान्त भी अपने क्रोध को रोकता है, तो अल्लाह उसे पुनरुत्थान (क्ंल व त्मेनततमबजपवद) के दिन सारी सृष्टि के सामने बुलाएगा, और उसे उसकी पसंद की कोई भी हूर दे देगा।"
>
> (हदीसः इब्ने माजा 4186)

यहाँ यह स्पष्ट कर देना आवश्यक प्रतीत होता है कि स्वर्ग में दी जानेवाली 72 हूरों की जो चर्चा समाज में बहुत फैल गई है, वह न क़ुरआन पर आधारित है, न किसी सही हदीस पर। एक अत्यंत कमजोर हदीस में यह बात मिलती है। वहां से निकालकर लोगों ने इस्लाम को बदनाम करने के प्रयत्न में उसको बहुत ज़्यादा प्रचलित कर दिया है। यह बात भी पाठकों के समक्ष रहनी चाहिए कि भारतीय धर्मग्रंथों में पाई जानेवाली अप्सराओं की धारणा और क़ुरआन और हदीस की हूरों की धारणा में बहुत समानता देखी जा सकती है।

स्वर्ग के लोगों की कुछ विशेषताएं

1) स्वर्ग में प्रवेश पानेवाले अल्लाह के गुणगान करेंगे कि उसने अपना वादा पूरा कर दिखाया।

> और वे कहेंगे, "प्रशंसा अल्लाह के लिए, जिसने हमारे साथ अपना वादा सच कर दिखाया, और हमें इस भूमि का वारिस बनाया कि हम जन्नत में जहाँ चाहें वहाँ रहें-बसें।" अतः क्या ही अच्छा प्रतिदान है कर्म करनेवालों का!"
>
> (क़ुरआन 39:74)

2) स्वर्ग में प्रवेश पानेवाले अल्लाह के प्रति अपनी कृतज्ञता व्यक्त करेंगे कि उसने उन्हें नरक से बचाकर स्वर्ग का मार्ग दिखाया। बदले में अल्लाह भी उनके कर्मों की सराहना करेगा। इस दृश्य को क़ुरआन में इन शब्दों में प्रस्तुत किया गया है।

"उनके सीनों में एक-दूसरे के प्रति जो रंजिश होगी, उसे हम दूर कर देंगे; उनके नीचें नहरें बह रही होंगी और वे कहेंगे, "प्रशंसा अल्लाह के लिए है, जिसने इसकी ओर हमारा मार्गदर्शन किया। और यदि अल्लाह हमारा मार्गदर्शन न करता तो हम कदापि मार्ग नहीं पा सकते थे। हमारे रब के रसूल निस्संदेह सत्य लेकर आए थे।" और उन्हें आवाज़ दी जाएगी, "यह जन्नत है, जिसके तुम वारिस बनाए गए। उन कर्मों के बदले में जो तुम करते रहे थे।" (क़ुरआन 7:43)

3) स्वर्ग में प्रवेश पानेवाले अल्लाह के प्रति इतने कृतज्ञ होंगे कि वह हर समय उसकी प्रशंसा में लगे रहेंगे। उनकी हर बात की समाप्ति अल्लाह की प्रशंसा पर ही होगी।

"वहाँ उनकी पुकार यह होगी कि 'महिमा है तेरी, ऐ अल्लाह!' और उनका पारस्परिक अभिवादन 'सलाम' होगा। और उनकी पुकार का अन्त इसपर होगा कि 'प्रशंसा अल्लाह ही के लिए है जो सारे संसार का रब है।"

(क़ुरआन 10:10)

4) अल्लाह और उसके फरिश्ते स्वर्गवालों को सलाम करेंगे। इससे बड़ा सत्कार एक इनसान के लिए और क्या हो सकता है?

"सलाम है (उनपर), दयामय रब का उच्चारित किया हुआ।" (क़ुरआन 36:58)

"फ़रिश्ते हर ओर से उनके स्वागत के लिए आएंगे और उनसे कहेंगे, 'तुम पर सलामती है, तुमने दुनिया में जिस तरह सब्र से काम लिया उसके कारण आज तुक इसके अधिकारी हुए हो।" (क़ुरआन 13:23-24)

5) स्वर्ग में प्रवेश पानेवाले सौभाग्यशाली आकर्षक, अतिसुन्दर

और मनमोहक रेशम के तकिए लगाए अपने महलों और बाग़ों में बड़ी शान के साथ बैठा करेंगे। उनके समक्ष हर प्रकार के खाने-पीने की चीजें प्रस्तुत की जाया करेंगी और वह उसका लाभ उठाएंगे।

> "वे ऐसे बिछौनों पर तकिया लगाए हुए होंगे जिनके अस्तर गाढ़े रेशम के होंगे, और दोनों बाग़ों के फल झुके हुए निकट ही होंगे।" (क़ुरआन 55:54)

> "वही लोग हैं जिनके लिए जानी-बूझी नियत रोजी है, स्वादिष्ट फल। और वे नेमत भरी जन्नतों में सम्मानपूर्वक होंगे, तख़्तों पर आमने-सामने विराजमान होंगे; उनके बीच विशुद्ध पेय का पात्र फिराया जाएगा, बिलकुल साफ़, उज्जवल, पीनेवालों के लिए सर्वथा सुस्वादु।"
> (क़ुरआन 37:41-46)

नरक की कुछ झलकियाँ

नरक वह स्थान है जहाँ आख़िरत में असफल होनेवाले लोगों को दण्डित किया जाएगा। अपराधी और उद्दंड लोगों के दण्ड का प्रावधान समाज में सदा रहा है, पर क्या लोगों को उनके अपराध के अनुरूप दण्ड मिल पाता है? इस प्रश्न का सकारात्मक उत्तर देना कठिन है। इसके अनेकों कारण हो सकते हैं, जिनमें से कुछ इस प्रकार हैंः

1. प्रायः अपराधी क़ानून की पकड़ से बच जाते हैं। उन्हें उपयुक्त दण्ड तो दूर, कोई भी दण्ड नहीं मिल पाता।
2. कभी वास्तविक अपराधी के स्थान पर दुसरे निर्दोष व्यक्ति को दंडित कर दिया जाता है और अपराधी स्वतंत्र घूमता रहता है।
3. समाज में फैला भ्रष्टाचार भी अपराधियों के सज़ा से बच निकलने में सहायक होता है। पैसे एवं ताकत के बल पर वे स्वयं को बचा लेते हैं।
4. कई बार सज़ा अपराध की जघन्यता के अनुरूप नहीं होती और अपराधी थोड़ी सज़ा पाकर बच निकलता है।
5. कुछ अपराध इतने जघन्य होते हैं कि उनका दुष्प्रभाव पीढ़ियों तक चलता रहता है। ऐसे में अपराधी को यदि सज़ा मिली भी तो उसकी मृत्यु के पश्चात् निरन्तर पड़ने वाले प्रभाव की सज़ा से तो बच ही जाता है।
6. समय के साथ सज़ा भी परिवर्तित होती रहती है। कई बार कुछ अपराध सज़ा की सीमा से बाहर कर दिए जाते हैं।
7. एक ही अपराध की सज़ा विभिन्न देशों में भिन्न होती हैं। एक देश जिसको अपराध मानता है आवश्यक नहीं कि दूसरा देश भी उसे अपराध माने।
8. युद्ध के समय कितने ही नरसंहार हो जाते हैं, पर किसी को सज़ा नहीं मिलती।

यह और इसी प्रकार के अनेक कारण हैं, जिनके आधार पर यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि इनसानों द्वारा स्थापित न्यायिक व्यवस्था अपराधियों को उचित और अनुकूल दंड देने में असमर्थ और असक्षम हैं। ऐसे में प्रश्न उठता है कि क्या कभी इन अपराधियों को उपयुक्त, अनुकूल और समुचित दंड नहीं मिल सकेगा?

इस प्रश्न पर हम जितना विचार कर लें, इसी निष्कर्ष पर पहुंचेंगे कि ऐसा एक समय अवश्य आना चाहिए जब सभी के साथ पूर्णरूप से इन्साफ हो। ऐसा समय जिसमें न पैसा किसी को दंड से बचा सके, न सिफ़ारिश और न सत्ता।

अल्लाह ईश्वर सदैव से अपने पैग़म्बरों के माध्यम से ऐसे ही एक दिन की चेतावनी देता आया है, पर बहुत कम इनसानों ने उसे स्वीकार किया और सचेत हुए। क़ुरआन, जो ईश्वर की ओर से अवतरित अंतिम ग्रन्थ है, इस प्रकार की चेतावनी से भरा हुआ है।

> "और डरो उस दिन से जब न कोई किसी की ओर से कुछ तावान भरेगा और न किसी की ओर से कोई सिफ़ारिश ही क़बूल की जाएगी और न किसी की ओर से कोई फ़िद्‌या (अर्थदंड) लिया जाएगा और न वे कोई सहायता ही पा सकेंगे।" (क़ुरआन 2:48)

इस्लाम में उस दिन को 'आख़िरत' के नाम से जाना जाता है। उस दिन दण्डित होनेवाले अपराधियों को जिस स्थान पर एकत्रित किया जायेगा उसे जहन्नम (नरक) कहते हैं। नरक में चारों ओर आग ही आग है, उसी में अपराधियों को डाल दिया जाएगा और उसी में वह सदैव रहेंगे, प्रताड़ित और अपमानित होकर। नरक कैसा स्थान है और वहां किस प्रकार यातनाएं दी जाएंगी, इसकी कुछ झलकियाँ प्रस्तुत हैः-

नरक अत्यंत विशाल है

नरक में डाले जानेवालों की संख्या बहुत अधिक होगी। पूरे मानव इतिहास में सदा ही अपराधियों की संख्या बहुत रही है और

आख़िरत में उन सबको नरक में डाला जाएगा। नरक की लम्बाई, चौड़ाई और गहराई इतनी उपयुक्त होगी कि इन अरबों-ख़रबों इनसानों को वहां एक साथ एकत्रित किया जा सके। अल्लाह का इनकार करनेवाले, उसके विद्रोही, पाखंडी, पापी, सभी के लिए नरक में स्थान होगा। क़ुरआन की यह आयत उसकी विशालता को दर्शाती है :

> "जिस दिन हम जहन्नम से कहेंगे, ''क्या तू भर गई?'' और वह कहेगी, ''क्या अभी और भी कुछ है?"
>
> (क़ुरआन 50:30)

हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) ने नरक की विशालता को समझाने के लिए बताया कि:

> "उस दिन नरक को खींच कर सामने लाया जाएगा। उसे सत्तर हज़ार रस्सियों से खींचा जाएगा और एक-एक रस्सी को सत्तर हज़ार फ़रिश्ते खींच रहे होंगे।" (हदीस मुस्लिम)
>
> "यदि सात गर्भवती ऊंटों जितना बड़ा पत्थर नरक के किनारे से फेंका जाता, तो वह सत्तर वर्ष तक उड़ता रहता, और फिर भी वह तल तक नहीं पहुंचता।"
>
> (हदीस सहीह अल-जामी)
>
> "नर्क की चोटी से फेंके गए पत्थर को नीचे तक पहुंचने में सत्तर साल लगते हैं।" (हदीस मुस्लिम)

नरक की श्रेणियां

नरक में भी लोगों को दिए जानेवाले दंडों के अनुसार विभिन्न श्रेणियां होंगी और इनमें अन्तर आग की भयानकता और उसकी गर्मी में होगा। अल्लाह ने पाखंडियों के लिए नरक का सबसे निचला हिस्सा निश्चित किया है, जहाँ आग की तीव्रता सबसे अधिक होती है। इससे भी नरक में विभिन्न श्रेणियों के होने का संकेत मिलता है।

> "निस्संदेह कपटाचारी आग (जहन्नम) के सबसे निचले खंड में होंगे, और तुम कदापि उनका कोई सहायक न पाओगे।"
>
> (क़ुरआन 4:145)

क़ुरआन में बताया गया है कि लोगों को उनके कर्मों अनुसार बदला मिलेगा।

> "सभी के दर्जे उनके कर्मों के अनुसार हैं। और जो कुछ वे करते हैं, उससे तुम्हारा रब अनभिज्ञ नहीं है।"
>
> (क़ुरआन 6:132)

> "भला क्या जो व्यक्ति अल्लाह की इच्छा पर चले वह उस जैसा हो सकता है जो अल्लाह के प्रकोप का भागी हो चुका हो और जिसका ठिकाना जहन्नम है? और वह क्या ही बुरा ठिकाना है। अल्लाह के यहाँ उनके विभिन्न दर्जे हैं और जो कुछ वे कर रहे हैं, अल्लाह की नज़र में है।"
>
> (क़ुरआन 3:162-163)

नरक के प्रवेशद्वार

स्वर्ग की भांति नरक के भी कई प्रवेशद्वार हैं। क़ुरआन के अनुसार इनकी संख्या सात है। इनमें से हर द्वार से प्रवेश पानेवाले अपराधियों की संख्या निर्धारित है। उनके कर्मों के अनुसार उन्हें उपयुक्त द्वार से प्रवेश मिलेगा और अनुकूल श्रेणी में उनको स्थान दिया जाएगा।

> "निश्चय ही जहन्नम का ऐसे समस्त लोगों से वादा है। उसके सात द्वार हैं। प्रत्येक द्वार के लिए उनका एक ख़ास हिस्सा होगा।" (क़ुरआन 15:43-44)

इन अपराधियों को जब नरक पर लाया जाएगा तो उसके द्वार खुलेंगे और उसके संरक्षक उनसे प्रश्न करेंगे कि क्या तुम्हारे पास कोई डरानेवाला नहीं आया था?

> "जिन लोगों ने इनकार किया, वे गरोह के गरोह जहन्नम की ओर ले जाए जाएँगे, यहाँ तक कि जब वे वहाँ पहुँचेंगे तो उसके द्वार खोल दिए जाएँगे और उसके प्रहरी उनसे कहेंगे, ''क्या तुम्हारे पास तुम्हीं में से रसूल नहीं आए थे जो तुम्हें तुम्हारे रब की आयतें सुनाते रहे हों और तुम्हें इस

दिन की मुलाक़ात से सचेत करते रहे हों?" वे कहेंगे, ''क्यों नहीं (वे तो आए थे)।" किन्तु इनकार करनेवालों पर यातना की बात सत्यापित होकर रही।" (क़ुरआन 39:71)

इसके बाद उनको नरक में प्रवेश कराया जाएगा और उसके द्वार को कभी न खुलने के लिए बंद कर दिया जाएगा। उनके वहां से निकल भागने की कोई सम्भावना नहीं होगी।

"रहे वे लोग जिन्होंने हमारी आयतों का इनकार किया, वे दुर्भाग्यशाली लोग हैं। उनपर आग होगी, जिसे बन्द कर दिया गया होगा।" (क़ुरआन 90:19-20)

"तबाही है हर कचोके लगाने वाले, ऐब निकालने वाले के लिए, जो माल इकट्ठा करता और उसे गिनता रहा। समझता है कि उसके माल ने उसे अमर कर दिया। कदापि नहीं, वह चूर-चूर कर देनेवाली में फेंक दिया जाएगा, और तुम्हें क्या मालूम कि वह चूर-चूर कर देनेवाली क्या है? वह अल्लाह की दहकाई हुई आग है, जो ढांक लेती है दिलों को। वह उनपर ढाँककर बन्द कर दी गई होगी, लम्बे-लम्बे स्तम्भों में।'' (क़ुरआन 104:1-9)

नरक के रखवाले

नरक पर रखवालों के रूप में ऐसे फ़रिश्ते नियुक्त होंगे, जो अत्यंत कठोर और गंभीर होंगे। उनपर किसी के रोने-चिल्लाने और विनती करने का कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा। वह अल्लाह के आदेश को हर स्थिति में पूरा करेंगे।

"ऐ ईमान लानेवालो! अपने आपको और अपने घरवालों को उस आग से बचाओ जिसका ईंधन मनुष्य और पत्थर होंगे, जिसपर कठोर स्वभाव के ऐसे बलशाली फ़रिश्ते नियुक्त होंगे जो अल्लाह की अवज्ञा उसमें नहीं करेंगे जो आदेश भी वह उन्हें देगा, और वे वही करेंगे जिसका उन्हें आदेश दिया जाएगा।" (क़ुरआन 66:6)

क़ुरआन के अनुसार नरक पर नियुक्त कार्यकर्ता फ़रिश्तों की

संख्या 19 होगी। इनकार करनेवाले इस संख्या को लेकर वाद-विवाद का विषय बना लेंगे, और सोचेंगे कि यह संख्या तो बहुत कम है और हम इनका मुक़ाबला कर लेंगे। जबकि अल्लाह और उसकी किताब को माननेवाले इसको सहजता से स्वीकार लेंगे और इससे उनके समर्पण में बढ़ोतरी हो जाएगी।

> "उसपर उन्नीस (कार्यकर्ता) नियुक्त हैं। और हमने उस आग पर नियुक्त रहनेवालों को फरिश्ते ही बनाया है, और हमने उनकी संख्या को इनकार करनेवालों के लिए मुसीबत और आज़माइश ही बनाकर रखा है। ताकि वे लोग जिन्हें किताब प्रदान की गई थी पूर्ण विश्वास प्राप्त करें, और वे लोग जो ईमान ले आए वे ईमान में और आगे बढ़ जाएँ। और जिन लोगों को किताब प्रदान की गई वे और ईमान वाले किसी संशय मे न पड़ें, और ताकि जिनके दिलों मे रोग है वे और इनकार करनेवाले कहें, "इस वर्णन से अल्लाह का क्या अभिशय है?" इस प्रकार अल्लाह जिसे चाहता है पथभ्रष्ट कर देता है और जिसे चाहता है संमार्ग प्रदान करता है। और तुम्हारे रब की सेनाओं को स्वयं उसके सिवा कोई नहीं जानता, और यह तो मनुष्य के लिए मात्र एक शिक्षा-सामग्री है।" (क़ुरआन 74:30-31)

नरक में डाले जानेवाले अभागी उसके पहरेदारों से विनती करेंगे कि अपने रब से कहकर वह उनका जीवन ही समाप्त करा दें ताकि इस यातना से बच जाएं।

> "वे पुकारेंगे, "ऐ मालिक! तुम्हारा रब हमारा काम ही तमाम कर दे!" वह कहेगा, "तुम्हें तो इसी दशा में रहना है।"
> (क़ुरआन 43:77)

नरक की आग के विभिन्न नाम

क़ुरआन में विभिन्न स्थानों पर नरक के लिए अलग-अलग नाम उपयोग किए गए हैं, जिनकी संख्या सात है। यह नाम इस प्रकार हैः

1) जहन्नम 2) लज़ा 3) अल-हुतमा
4) सअीर 5) सकर 6) अल-जहीम
7) अल-हावियह

नरक का ईंधन

नरक की आग की भयानकता और तीव्रता का अनुमान इससे लगाया जा सकता है कि लकड़ी और कोयला उसका ईंधन नहीं होंगे बल्कि वह इनसानों और पत्थरों से दहकाई जाएगी।

इनसान ईंधन बनेंगे :

"जिन लोगों ने अल्लाह के मुकाबले में इनकार की नीति अपनाई है, न तो उनके माल उनके कुछ काम आएँगे और न उनकी संतान ही। और वही हैं जो आग (जहन्नम) का ईंधन बनकर रहेंगे।"

पत्थर उसका ईंधन होंगे :

"फिर अगर तुम ऐसा न कर सको और तुम कदापि नहीं कर सकते, तो डरो उस आग से जिसका ईंधन इनसान और पत्थर हैं, जो इनकार करनेवालों के लिए तैयार की गई है।"

(क़ुरआन 2:24)

"ऐ ईमान लानेवालो! अपने आपको और अपने घरवालों को उस आग से बचाओ जिसका ईंधन मनुष्य और पत्थर होंगे, जिसपर कठोर स्वभाव के ऐसे बलशाली फरिश्ते नियुक्त होंगे जो अल्लाह की अवज्ञा उसमें नहीं करेंगे जो आदेश भी वह उन्हें देगा, और वे वही करेंगे जिसका उन्हें आदेश दिया जाएगा।" (क़ुरआन 66:6)

जिन्न भी उसका ईंधन बनेंगे :

"और यह कि हममें (जिन्नों) से कुछ मुस्लिम (आज्ञाकारी) हैं और हममें से कुछ हक़ से हटे हुए हैं। तो जिन्होंने आज्ञापालन का मार्ग ग्रहण कर लिया उन्होंने भलाई और सूझ-बूझ की राह ढूँढ ली। रहे वे लोग जो हक़ से हटे हुए

हैं, तो वे जहन्नम का ईंधन होकर रहे।"

(क़ुरआन 72:14-15)

झूठे इलाह (पूज्य) भी नरक का ईंधन बनाए जाएंगे :

"निश्चय ही तुम और वह कुछ जिनको तुम अल्लाह को छोड़कर पूजते हो सब जहन्नम के ईंधन हो। तुम उसके घाट उतरोगे। यदि ये पूज्य होते, तो उसमें न उतरते। और वे सब उसमें सदैव रहेंगे भी।" (क़ुरआन 21:98-99)

"और भड़कती आग पथभ्रष्ट लोगों के लिए प्रकट कर दी जाएगी। और उनसे कहा जाएगा, "कहाँ हैं वे जिन्हें तुम अल्लाह को छोड़कर पूजते रहे हो? क्या वे तुम्हारी कुछ सहायता कर रहे हैं या अपना ही बचाव कर सकते हैं?" फिर वे उसमें औंधे झोक दिए जाएँगे, वे और बहके हुए लोग और इबलीस की सेनाएँ, सबके सब।"

(क़ुरआन 26:91-95)

आग की तीव्रता और विशालता

नरक की आग दुनिया की आग से 70 गुना अधिक तीव्र है। "नरक की आग की तीव्रता बताते हुए हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) ने कहा, "तुम्हारी दुनिया की आग नरक की आग का सत्तरवां हिस्सा है" किसी ने पूछा कि क्या यह आग काफ़ी नहीं है? उन्होंने उत्तर दिया, "नरक की आग में 69 अंश अधिक है दुनिया की आग से, और सबकी तीव्रता इसी प्रकार है।" (हदीस : बुख़ारी)

नरक की आग हर समय भड़कती रहेगी और उसमें कभी कमी न आएगी।

"निश्चय ही अल्लाह ने इनकार करनेवालों पर लानत की है और उनके लिए भड़कती आग तैयार कर रखी है, जिसमें वे सदैव रहेंगे। न वे कोई निकटवर्ती समर्थक पाएँगे और न (दूर का) सहायक।" (क़ुरआन 33:64-65)

"और रहा वह व्यक्ति जिसका कर्म-पत्र (उसके बाएँ हाथ में) उसकी पीठ के पीछे से दिया गया, तो वह विनाश (मृत्यु) को पुकारेगा, और दहकती आग में जा पड़ेगा।"

(क़ुरआन 84:10-12)

नरक की आग सब कुछ भस्म कर देगी, सब कुछ नष्ट कर देगी और कुछ भी अछूता नहीं छोड़ेगी। वह हमारी त्वचा को जलाती हुई हड्डी तक पहुंच जाएगी, पेट के अन्दर जो कुछ है सबको जला और पिघलाकर बाहर उजागर कर देगी।

"मैं शीघ्र ही उसे 'सकर' (जहन्नम की आग) में झोंक दूँगा। और तुम्हें क्या पता कि सकर क्या है? वह न तरस खाएगी और न छोड़ेगी, खाल को झुलसा देनेवाली है।"

(क़ुरआन 74:26-29)

मुजरिम को दूर से देखकर ही आग की तीव्रता बढ़ जाएगी और वह दूर से उसकी आवाज सुनने लगेंगे।

"नहीं, बल्कि बात यह है कि वे लोग क़यामत की घड़ी को झुठला चुके हैं। और जो उस घड़ी को झुठला दे, उसके लिए हमने दहकती आग तैयार कर रखी है। जब वह उनको दूर से देखेगी तो वे उसके बिफरने और साँस खींचने की आवाजें सुनेंगे। और जब वे उसकी किसी तंग जगह जकड़े हुए डाले जाएँगे, तो वहाँ विनाश को पुकारने लगेंगे। (कहा जाएगा,) "आज एक विनाश को मत पुकारो, बल्कि बहुत-से विनाशों को पुकारो!" (क़ुरआन 25:11-14)

नरक की आग न कभी धूमिल होगी, न बुझेगी।

"क़यामत के दिन हम उन्हें औंधे मुँह इस दशा में इकट्ठा करेंगे कि वे अंधे-गूँगे और बहरे होंगे। उनका ठिकाना जहन्नम है। जब भी उसकी आग धीमी पड़ने लगेगी तो हम उसे उनके लिए और भड़का देंगे।" (क़ुरआन 17:97)

"यही वे लोग हैं जो आख़िरत के बदले सांसारिक जीवन के ख़रीदार हुए, तो न उनकी यातना हल्की की जाएगी और न

उन्हें कोई सहायता पहुँच सकेगी।" (क़ुरआन 2:86)

उसकी आग की लपटें पहाड़ों जैसी ऊँची होंगी और वह चिंगारियां फेंकती होंगी।

"निस्संदेह वे (ज्वालाएँ) महल जैसी (ऊँची) चिंगारियाँ फेंकती हैं मानो वे पीले ऊँट हैं!" (क़ुरआन 77:32-33)

नरक में लोगों का डाला जाना अल्लाह के वादे की पूर्ति होगी

अल्लाह ने हज़रत आदम (अलै॰) को इस संसार में भेजते समय यह चेतावनी दी थी कि जो लोग मेरी ओर से आए मार्गदर्शन का अनुसरण नहीं करेंगे, उन सबको नरक में झोंक दूंगा। आख़िरत में नरक में एक विशाल संख्या का नरक में डाला जाना उसकी इसी चेतावनी के पूरा होने का समय होगा।

"यदि हम चाहते तो प्रत्येक व्यक्ति को उसका अपना संमार्ग दिखा देते, किन्तु मेरी ओर से बात सत्यापित हो चुकी है कि "मैं जहन्नम को जिन्नों और मनुष्यों, सबसे भरकर रहूँगा।" (क़ुरआन 32:13)

मानवता का विशाल बहुमत नरक का भागी बनेगा

अत्यंत दुखदायक वास्तविकता है कि मानवता के विशाल बहुमत का अंतिम ठिकाना नरक ही होनेवाला है। बहुत थोड़ी संख्या होगी जिनको स्वर्ग में प्रवेश की अनुमति मिलेगी। कारण स्पष्ट है। इतिहास के किसी भी काल को देख लीजिए, इनसानों के बहुमत ने एकेश्वरवाद का विरोध किया है। इसकी वास्तविकता को स्वीकारते हुए भी शिर्क में लिप्त रहे हैं। एकेश्वरवाद के सन्देश को सदा ठठ्ठे में उड़ाने का प्रयत्न किया है और उसके अनुयायियों को नीचा दिखने की हर संभव साजिश रची है। क़ुरआन ने इस सत्य को इस प्रकार व्यक्त किया है।

"किन्तु चाहे तुम कितना ही चाहो, अधिकतर लोग तो मानेंगे नहीं। (क़ुरआन 12:103)

हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) ने इसी सत्य को व्यक्त करते हुए

> कहा कि, “हर एक हजार लोगों में 999 नरक में डाले जाएंगे, और मात्र एक को स्वर्ग में स्थान प्राप्त होगा।”
>
> (हदीस : बुख़ारी)

अल्लाह ने अपनी असीम कृपा से इनसानों को नरक से बचाने के लिए समय-समय पर विभिन्न स्थानों पर अपने पैग़म्बर भेजे, पर इनसानों के बहुमत ने उनके सन्देश को झुठला दिया। जिन थोड़े से लोगों ने उसे स्वीकार भी किया, उनकी भी बड़ी संख्या निष्ठावान नहीं रही और उसके अनुपालन में खरी नहीं उतरी। दुनिया और उसकी रंगीनियों से वह स्वयं को अलग नहीं कर पाए, हालांकि अल्लाह ने उनको क़ुरआन में इससे पूरी तरह अवगत करा दिया था।

> “मनुष्यों को चाहत की चीजों से प्रेम शोभायमान प्रतीत होता है कि वे स्त्रियाँ, बेटे, सोने-चाँदी के ढेर और निशान लगे (चुने हुए) घोड़े हैं और चौपाए और खेती। यह सब सांसारिक जीवन की सामग्री है और अल्लाह के पास ही अच्छा ठिकाना है।” (क़ुरआन 3:14)

एक आश्चर्यजनक सत्य यह कि नरक में डाले जानेवालों में महिलाओं की संख्या बहुत अधिक होगी। हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) ने कहा, “मैंने नरक को देखा तो नजर आया कि उसमें डाले गए लोगों में अधिकतर महिलाएं हैं।” (हदीस : बुख़ारी, मुस्लिम)

अल्लाह की नरकवासियों से वार्ता

जो लोग आख़िरत का और मृत्यु-पश्चात जवाबदेही का इनकार करते थे, नरक में अल्लाह उनसे प्रश्न करेगा कि क्या यह सत्य नहीं है? उस समय वह उस सत्य को स्वीकार कर लेंगे, जिसको अस्वीकार करने में उन्होंने अपनी पूरी शक्ति लगा दी थी।

> “और वे कहते हैं, “जो कुछ है बस यही हमारा सांसारिक जीवन है, हम कोई फिर उठाए जानेवाले नहीं हैं।” और यदि तुम देख सकते जब वे अपने रब के सामने खड़े किए जाएँगे! वह कहेगा, “क्या यह यथार्थ नहीं है?” कहेंगे,

"क्यों नहीं, हमारे रब की क़सम!" वह कहेगा, "अच्छा तो उस इनकार के बदले जो तुम करते रहे हो, यातना का मजा चखो।" (क़ुरआन 6:29-30)

नरक में अल्लाह उनसे प्रश्न करेगा कि जब मेरी आयतें तुम्हें सुनाई जाती थीं तो तुम उसका इनकार करते थे? उस समय समस्त झुठलानेवाले स्वयं को भटका हुआ स्वीकार कर लेंगे। वह अल्लाह से प्रार्थना करेंगे कि दुबारा वह ऐसा नहीं करेंगे, उन्हें यहाँ से निकलने का एक अवसर दिया जाए, वह अपनी बात को सत्य साबित करके दिखाएंगे।

(कहा जाएगा,) "क्या तुम्हें मेरी आयतें सुनाई नहीं जाती थीं, तो तुम उन्हें झुठलाते थे?" वे कहेंगे, "ऐ हमारे रब! हमारा दुर्भाग्य हमपर प्रभावी हुआ और हम भटके हुए लोग थे। हमारे रब! हमें यहाँ से निकाल दे! फिर यदि हम दोबारा ऐसा करें तो निश्चय ही हम अत्याचारी होंगे।" वह कहेगा, "फिटकारे हुए तिरस्कृत, इसी में पड़े रहो और मुझसे बात न करो।" (क़ुरआन 23:106-108)

अल्लाह नरकवासियों से यह प्रश्न भी करेगा कि क्या उनके पास कोई रसूल नहीं आए थे, जो उनको इस दिन की भयानकता से डराते? उस समय वह अपनी गलती स्वीकार कर लेंगे और स्वयं अपने विरुद्ध गवाही देने लगेंगे।

"ऐ जिन्नों और मनुष्यों के गिरोह! क्या तुम्हारे पास तुम्हीं में से रसूल नहीं आए थे, जो तुम्हें मेरी आयतें सुनाते और इस दिन के पेश आने से तुम्हें डराते थे?" वे कहेंगे, "क्यों नहीं! (रसूल तो आए थे) हम स्वयं अपने विरुद्ध गवाह हैं।" उन्हें तो सांसारिक जीवन ने धोखे में रखा। मगर अब वे स्वयं अपने विरुद्ध गवाही देने लगे कि वे इनकार करनेवाले थे। यह जान लो कि तुम्हारा रब ज़ुल्म करके बस्तियों को विनष्ट करनेवाला न था, जबकि उनके निवासी बेसुध रहे हों। (क़ुरआन 6:130-131)

अल्लाह नरकवासियों से यह भी पूछेगा कि तुम आज एक-दुसरे की सहायता क्यों नहीं कर रहे हो? इसका उत्तर तो वह क्या देंगे, एक-दुसरे पर आरोप लगाना आरंभ कर देंगे।

> "और तनिक उन्हें ठहराओ, उनसे पूछना है, "तुम्हें क्या हो गया, जो तुम एक-दूसरे की सहायता नहीं कर रहे हो?" बल्कि वे तो आज बड़े आज्ञाकारी हो गए हैं। एक-दूसरे की ओर रुख़ करके पूछते हुए कहेंगे, "तुम तो हमारे पास आते थे दाहिने से (और बाएँ से)।" वे कहेंगे, "नहीं, बल्कि तुम स्वयं ही ईमानवाले न थे। और हमारा तो तुमपर कोई ज़ोर न था, बल्कि तुम स्वयं ही सरकश लोग थे। अन्ततः हमपर हमारे रब की बात सत्यापित होकर रही। निस्संदेह हमें (अपनी करतूत का) मजा चखना ही होगा।"
>
> (क़ुरआन 37:24-31)

अल्लाह से शत्रुता नरक में ले जाएगी

अल्लाह से शत्रुता और उसके पैग़म्बरों का इनकार, इनसान को सफलता के मार्ग पर नहीं, नरक की आग की ओर ले जाएगी।

> "अतः हम अवश्य ही उन लोगों को, जिन्होंने इनकार किया, कठोर यातना का मजा चखाएँगे, और हम अवश्य उन्हें उसका बदला देंगे जो निकृष्टतम कर्म वे करते रहे हैं। वह है अल्लाह के शत्रुओं का बदला - आग। उसी में उनका सदा का घर है, उसके बदले में जो वे हमारी आयतों का इनकार करते रहे।" (क़ुरआन 41:26-28)

नरक में दी जाने वाली यातनाएं

नरक में डाले जाने वालों का पाप भिन्न होने के कारण उनको दी जाने वाली यातना में भी अन्तर होगा। किसी को हलकी यातना में डाला जाएगा और किसी को कठोर में।

1) **सबसे कम यातना**

"क़ियामत के दिन नरक में जिस व्यक्ति को सबसे हल्की यातना दी जाएगी, उसके पैरों के नीचे सुलगता हुआ एक अंगारा रखा जाएगा और उसके प्रभाव से उसका दिमाग उबलने लगेगा।" (हदीस : मुस्लिम)

2) **त्वचा का जलाया जाना : जलने के बाद नई त्वचा प्रदान कर दी जाएगी।**

"जिन लोगों ने हमारी आयतों का इनकार किया, उन्हें हम जल्द ही आग में झोंकेंगे। जब भी उनकी खालें पक जाएँगी, तो हम उन्हें दूसरी खालों से बदल दिया करेंगे, ताकि वे यातना का मज़ा चखते ही रहें। निस्संदेह अल्लाह प्रभुत्वशाली, तत्वदर्शी है।" (क़ुरआन 4:56)

3) **पिघलाया जाना**

."जिन लोगों ने कुफ़्र किया उनके लिए आग के वस्त्र काटे जा चुके हैं। उनके सिरों पर खौलता हुआ पानी डाला जाएगा। इससे जो कुछ उनके पेटों में है, वह पिघल जाएगा और खालें भी।" (क़ुरआन 22:19-20)

4) **चेहरों का झुलसाया जाना**

"और जो कुचरित्र लेकर आया तो ऐसे लोगों के मुँह आग में औंधे होंगे। (और उनसे कहा जाएगा) "क्या तुम उसके सिवा किसी और चीज़ का बदला पा रहे हो, जो तुम करते रहे हो?" (क़ुरआन 27:90)

5) **आग में घसीटा जाना**

"निस्संदेह, अपराधी लोग गुमराही और दीवानेपन में पड़े हुए हैं। जिस दिन वे अपने मुँह के बल आग में घसीटे जाएँगे, "चखो मज़ा आग की लपट का!" (क़ुरआन 54:47-48)

6) **चेहरों का काला किया जाना**

"रहे वे लोग जिन्होंने बुराइयाँ कमाईं, तो एक बुराई का बदला भी उसी जैसा होगा; और ज़िल्लत उनपर छा रही

होगी। उन्हें अल्लाह से बचानेवाला कोई न होगा। उनके चहरों पर मानो अँधेरी रात के टुकड़े ओढ़ा दिए गए हों। वही आगवाले हैं, उन्हें उसमें सदैव रहना है।"

7) आग उनके दिलों तक पहुँच जाएगी

"कदापि नहीं, वह चूर-चूर कर देनेवाली में फेंक दिया जाएगा, और तुम्हें क्या मालूम कि वह चूर-चूर कर देनेवाली क्या है? वह अल्लाह की दहकाई हुई आग है, जो ढांक लेती है दिलों को।" (क़ुरआन 104:4-7)

8) अंतड़ियाँ बाहर निकल आएंगी

हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) ने कहाः "क़यामत के दिन एक व्यक्ति लाया जाएगा और उसे नरक की आग में फेंक दिया जाएगा। उसकी अंतड़ियाँ जलकर बाहर निकल आएंगी और उसे उठाए हुए वह ऐसे चक्कर लगाएगा जैसे कोहलू में गधा। नरक के लोग उसके पास एकत्रित हो जाएंगे और कहेंगे, "ऐ फ़ुलां, तुझे क्या हुआ है? क्या तू हमें भलाई करने पर नहीं उभारता था और बुराई से रोकता था? वह कहेगा, "मैं तुम्हें भलाई पर उभारता था, पर स्वयं नहीं करता था। तुमको बुराई से रोकता था, पर स्वयं करता था। फिर वह उसी प्रकार गधे की तरह नरक में घूमता रहेगा।

9) नरक की ज़ंजीरें, बेड़ियां और तौक

"हमने इनकार करनेवालों के लिए जंजीरें और तौक़ और भड़कती हुई आग तैयार कर रखी है।" (क़ुरआन 76:4)

"जब वे यातना देखेंगे तो मन ही मन पछताएँगे और हम उन लोगों की गरदनों में जिन्होंने कुफ़्र की नीति अपनाई, तौक़ डाल देंगे। वे वही तो बदले में पाएँगे, जो वे करते रहे थे?" (क़ुरआन 34:33)

"निश्चय ही हमारे पास बेड़ियाँ हैं और भड़कती हुई आग। और गले में अटकने वाला भोजन है और दुखद यातना।"

(क़ुरआन 73:12-13)

"पकड़ो उसे और उसकी गरदन में तौक़ डाल दो, फिर उसे भड़कती हुई आग में झोंक दो, फिर उसे एक ऐसी जंजीर में जकड़ दो जिसकी माप सत्तर हाथ है। (क़ुरआन 69:30-32)

10) **दुःख के साथ वह खेद और याचना करेंगे**

"और रहा वह व्यक्ति जिसका कर्म-पत्र (उसके बाएँ हाथ में) उसकी पीठ के पीछे से दिया गया, तो वह विनाश (मृत्यु) को पुकारेगा, और दहकती आग में जा पड़ेगा।"

(क़ुरआन 84:10-12)

11) **नरक में भयानक रूप वाले सांप और बिच्छु भी होंगे**

हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) ने नरक के बारे में बताया कि वहां "ऊँट की जैसी लम्बी गर्दनों वाले सांप होंगे। यह यदि किसी को काट लें तो 40 वर्षों तक वह उसकी पीड़ा महसूस करता रहेगा।" आपने आगे बताया कि "वहां गधों जितने बड़े बिच्छु होंगे जो यदि किसी को डंक मार दें तो 40 वर्षों तक उसकी पीड़ा महसूस होती रहेगी।"

(हदीस : अहमद)

नरकवासियों का भोजन और पेय

नरक में प्रवेश का अर्थ है सदा के लिए हर सुख-सुविधा से वंचित हो जाना। न भोजन तृप्त करनेवाला होगा, न पानी से प्यास बुझेगी और न वहां कोई सहायता करनेवाला मिलेगा। उनके भोजन के लिए दरीअ और ज़क़्क़ूम के अतिरिक्त वहां कुछ नहीं होगा और इससे उनकी भूख मिटने के बजाए यह उनकी अंतड़ियों को और काट देगा।

"उनके लिए कोई खाना न होगा सिवाय एक प्रकार के दरीअ के, जो न पुष्ट करे और न भूख मिटाए।"

(क़ुरआन 88:6-7)

"निस्संदेह ज़क़्क़ूम का वृक्ष गुनहगार का भोजन होगा, तेल की तलछट जैसा, वह पेटों में खौलता होगा, जैसे गर्म पानी खौलता है।" (क़ुरआन 44:43-46)

"क्या वह आतिथ्य अच्छा है या 'जक़्क़ूम' का वृक्ष? निश्चय ही हमने उस (वृक्ष) को ज़ालिमों के लिए परीक्षा बना दिया है। वह एक वृक्ष है जो भड़कती हुई आग की तह से निकलता है। उसके गाभे मानो शैतानों के सिर (साँपों के फन) हैं। तो वे उसे खाएँगे और उसी से पेट भरेंगे। फिर उनके लिए उसपर खौलते हुए पानी का मिश्रण होगा। फिर उनकी वापसी भड़कती हुई आग की ओर होगी।" (क़ुरआन 37:62-68)

"फिर तुम ऐ गुमराहो, झुठलाने वालो! ज़क़्क़ूम के वृक्ष में से खाओगे और उसी से पेट भरोगे; और उसके ऊपर से खौलता हुआ पानी पिओगे; "और तौंस लगे ऊँट की तरह पीओगे।" यह बदला दिए जाने के दिन उनका पहला सत्कार होगा।" (क़ुरआन 56:51-56)

क़ुरआन के अध्ययन से ज्ञात होता है कि नरकवासियों के लिए इनके अतिरिक्त भोजन के रूप में घावों के धोवन, पीप और उसका रक्त भी सम्मिलित होगा।

"अतः आज उसका यहाँ कोई घनिष्ट मित्र नहीं, और न ही धोवन के सिवा कोई भोजन है, उसे ख़ताकारों (अपराधियों) के अतिरिक्त कोई नहीं खाता।" (क़ुरआन 69:35-37)

"उसे ख़ताकारों (अपराधियों) के अतिरिक्त कोई नहीं खाता।" जहन्नम, जिसमें वे प्रवेश करेंगे। तो वह बहुत-ही बुरा विश्राम-स्थल है! यह है, अब उन्हें इसे चखना है - खौलता हुआ पानी और रक्तयुक्त पीप और इसी प्रकार की दूसरी और भी चीजें।" (क़ुरआन 38:55-58)

पीप और धोवन और घाव का रक्त, दरीअ और ज़क़्क़ूम के भोजन के उपरान्त नरकवासियों को पीने के लिए जो कुछ मिलेगा, वह भी न स्वादिष्ट होगा, न संतुष्टि प्रदान करने वाला। क़ुरआन और हदीस में नरकवासियों को मिलनेवाले पेय के चार नाम मिलते हैं, जो इस प्रकार हैं :

1) **अल-हमीम : अत्यंत गर्म पानी**

"दहकती आग में प्रवेश करेंगे, खौलते हुए स्रोत से पिएँगे।"
(क़ुरआन 88:4-5)

"हमने तो अत्याचारियों के लिए आग तैयार कर रखी है, जिसकी कनातों ने उन्हें घेर लिया है। यदि वे फ़रियाद करेंगे तो फ़रियाद के प्रत्युक्त में उन्हें ऐसा पानी मिलेगा जो तेल की तलछट जैसा होगा; वह उनके मुँह भून डालेगा। बहुत-ही बुरा है वह पेय और बहुत ही बुरा है वह विश्रामस्थल!" (क़ुरआन 18:29)

2) **गिस्लीन : जख़्मों से निकलने वाला पीप और धोवन**

"अतः आज उसका यहाँ कोई घनिष्ट मित्र नहीं, और न ही गिस्लीन (पीप और धोवन) के सिवा कोई भोजन है, उसे ख़ताकारों (अपराधियों) के अतिरिक्त कोई नहीं खाता।"
(क़ुरआन 69:35-37)

3) **अल-मुह्ल : खौलता हुआ तेल**

हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) ने फरमायाः "वह खुलते हुए तेल की तरह है, और जब वह किसी व्यक्ति के चेहरे के पास लाया जाता है तो उसकी त्वचा झुलसकर उसमें गिर जाती है।" (हदीस : अहमद, तिरमिजी)

4) **सदीद : नरकवासियों के मांस और त्वचा से निकलनेवाला पस, कचलहू**

"वह जहन्नम से घिरा है और पीने को उसे सदीद (कचलहू) का पानी दिया जाएगा, जिसे वह कठिनाई से घूँट-घूँट करके पिएगा और ऐसा नहीं लगेगा कि वह आसानी से उसे उतार सकता है, और मृत्यु उसपर हर ओर से चली आती होगी, फिर भी वह मरेगा नहीं। और उसके सामने कठोर यातना होगी।" (क़ुरआन 14:16-17)

नरकवासियों के वस्त्र

नरक में डाले जाने वाले अभागों के वस्त्र भी आग से ही बने होंगे।

> "अतः जिन लोगों ने कुफ़्र किया उनके लिए आग के वस्त्र काटे जा चुके हैं। उनके सिरों पर खौलता हुआ पानी डाला जाएगा।" (क़ुरआन 22:19)

क़ुरआन यह भी बताता है कि उनके वस्त्र तारकोल से बने होंगे।

> "उनके परिधान तारकोल के होंगे और आग उनके चहरों पर छा रही होगी।" (क़ुरआन 14:50)

उनके वस्त्र के साथ ही उनका ओढ़ना-बिछौना भी आग का होगा।

> "उनके लिए बिछौना जहन्नम का होगा और ओढ़ना भी उसी का। अत्याचारियों को हम ऐसा ही बदला देते हैं।" (क़ुरआन 7:41)

पथभ्रष्ट लोग अपने मुखिया की अगवाई में नरक में प्रवेश करेंगे

समाज को पथभ्रष्ट करने में मुखिया का बड़ा हाथ होता है। वह जिस मार्ग पर चाहे लोगों को अपने पीछे ले जाए। क़ुरआन में ऐसे ही एक सरदार फ़िरौन का वर्णन बड़े ही विस्तार से मिलता है, जिसने अपनी पूरी क़ौम को गुमराही के मार्ग पर डाला था। उसी का वर्णन करते हुए अल्लाह इस सत्य को उजागर करता है कि वह आगे-आगे होगा और उसके अनुयायी उसके पीछे और सब नरक में ढकेल दिए जाएंगे।

> "और हमने मूसा (अलै०)को अपनी निशानियाँ और स्पष्ट प्रमाण के साथ फ़िरऔन और उसके सरदारों के पास भेजा, किन्तु वे फ़िरऔन ही के कहने पर चले, हालाँकि फ़िरऔन की बात कोई ठीक बात न थी। क़ियामत के दिन वह

अपनी क़ौम के लोगों के आगे होगा - और उसने उन्हें आग में जा उतारा, और बहुत-ही बुरा घाट है वह उतरने का! यहाँ भी लानत ने उनका पीछा किया और क़ियामत के दिन भी - बहुत-ही बुरा पुरस्कार है यह जो किसी को दिया जाए!" (क़ुरआन 11:96-99)

नरकवासियों का पश्चाताप, रोना और चिल्लाना

नरक की भीषण आग और उसकी यातना देखकर समस्त मुजरिमों को अपने पापों पर पश्चाताप होगा और वह अपनी गुमराही को स्वीकार करेंगे। पर वहां से भाग निकलने का न कोई अवसर होगा, न ही यातना कम किए जाने का।

"जिन लोगों ने अपने रब के साथ कुफ़्र किया उनके लिए जहन्नम की यातना है और वह बहुत-ही बुरा ठिकाना है। जब वे उसमें डाले जाएँगे तो उसकी दहाड़ने की भयानक आवाज सुनेंगे और वह प्रकोप से बिफर रही होगी। ऐसा प्रतीत होगा कि प्रकोप के कारण अभी फट पड़ेगी। हर बार जब भी कोई समूह उसमें डाला जाएगा तो उसके कार्यकर्ता उनसे पूछेंगे, "क्या तुम्हारे पास कोई सावधान करनेवाला नहीं आया?" वे कहेंगे, "क्यों नहीं, अवश्य हमारे पास सावधान करनेवाला आया था, किन्तु हमने झुठला दिया और कहा कि अल्लाह ने कुछ भी नहीं अवतरित किया। तुम तो बस एक बड़ी गुमराही में पड़े हुए हो।" और वे कहेंगे, "यदि हम सुनते या बुद्धि से काम लेते तो हम दहकती आग में पड़नेवालों में सम्मिलित न होते।" इस प्रकार वे अपने गुनाहों को स्वीकार करेंगे, तो धिक्कार हो दहकती आग वालों पर!" (क़ुरआन 69:6-11)

वे अल्लाह से विनती करेंगे कि उन्हें नरक से निकाल दिया जाए, भविष्य में वह ऐसा नहीं करेंगे। पर अल्लाह उसने बात करने से मना कर देगा।

"वे कहेंगे, "ऐ हमारे रब! हमारा दुर्भाग्य हमपर प्रभावी हुआ और हम भटके हुए लोग थे। हमारे रब! हमें यहाँ से निकाल दे! फिर यदि हम दोबारा ऐसा करें तो निश्चय ही हम अत्याचारी होंगे।" वह कहेगा, "फिटकारे हुए तिरस्कृत, इसी में पड़े रहो और मुझसे बात न करो।"

(क़ुरआन 23:106-108)

जिस दिन को वह झुठलाया करते थे, उसे जब अपने सामने अपनी आँखों से देख लेंगे तो अपनी करनी पर वह पछतायेंगे और अल्लाह से एक बार दुनिया में वापस भेजे जाने की विनती करेंगे जिससे अब वह अच्छे कर्म करें।

"और यदि कहीं तुम देखते जब वे अपराधी अपने रब के सामने अपने सिर झुकाए होंगे कि "हमारे रब! हमने देख लिया और सुन लिया। अब हमें वापस भेज दे, ताकि हम अच्छे कर्म करें। निस्संदेह अब हमें विश्वास हो गया।" यदि हम चाहते तो प्रत्येक व्यक्ति को उसका अपना संमार्ग दिखा देते, किन्तु मेरी ओर से बात सत्यापित हो चुकी है कि "मैं जहन्नम को जिन्नों और मनुष्यों, सबसे भरकर रहूँगा।" अतः अब चखो मज़ा, इसका कि तुमने अपने इस दिन के मिलन को भुलाए रखा। तो हमने भी तुम्हें भुला दिया। शाश्वत यातना का रसास्वादन करो, उसके बदले में जो तुम करते रहे हो।" (क़ुरआन 32:12-14)

इस संसार में जो पूरा जीवन पैग़म्बरों को बड़ी हठधर्मी से झुठलाते रहे, जिनकी शिक्षाओं पर कभी ध्यान नहीं दिया, उनकी सत्यता को अपनी आँखों के सामने देखकर वह वहां अपने लिए किसी सिफ़ारिशी को ढूंढेंगे, जो उनको वहां से निकालने की सिफ़ारिश कर दे।

"और निश्चय ही हम उनके पास एक ऐसी किताब ले आए हैं, जिसे हमने ज्ञान के आधार पर विस्तृत किया है, जो ईमान लानेवालों के लिए मार्गदर्शन और दयालुता है। क्या

> वे लोग केवल इसी की प्रतीक्षा में हैं कि उसकी वास्तविकता और परिणाम प्रकट हो जाए? जिस दिन उसकी वास्तविकता सामने आ जाएगी, तो वे लोग जो इससे पहले उसे भूले हुए थे, बोल उठेंगे, "वास्तव में, हमारे रब के रसूल सत्य लेकर आए थे। तो क्या हमारे कुछ सिफ़ारिशी हैं, जो हमारी सिफ़ारिश कर दें या हमें वापस भेज दिया जाए कि जो कुछ हम करते थे उससे भिन्न कर्म करें?" उन्होंने अपने-आपको घाटे में डाल दिया और जो कुछ वे झूठ घढ़ते थे, वे सब उनसे गुम होकर रह गए।" (क़ुरआन 7:52-53)

जिन सरदारों के पीछे उनके भक्त आँख बंदकर बिना सोचे-समझे चला करते थे, नरक की कठोर यातना को देखकर वह उन सरदारों से झगड़ने लगेंगे। वह कामना करेंगे कि यदि एक बार पुनः उनको दुनिया का जीवन मिल जाए, तो वह इन सरदारों को मानने से इनकार कर देंगे। पर इस पश्चाताप से भी उनके लिए वहां से निकलने का कोई अवसर नहीं होगा।

> "जब वे लोग जिनके पीछे वे चलते थे, यातना को देखकर अपने अनुयायियों से विरक्त हो जाएँगे और उनके सम्बन्ध और सम्पर्क टूट जाएँगे। वे लोग जो उनके पीछे चले थे कहेंगे, "काश! हमें एक बार फिर संसार में लौटना होता तो जिस तरह आज ये हमसे विरक्त हो रहे हैं, हम भी इनसे विरक्त हो जाते।" इस प्रकार अल्लाह उनके लिए संताप बनाकर उन्हें उनके कर्म दिखाएगा और वे आग (जहन्नम) से निकल न सकेंगे।" (क़ुरआन 2:166-167)

सरदार और उनके अनुयायी एक-दुसरे से झगड़ेंगे। अनुयायी उनपर आरोप लगाएंगे कि तुम्हारे कारण हम आज नरक में आ गए हैं, अब हमारी आग की यातना को कुछ कम करो।

> "और सोचो जबकि वे आग के भीतर एक-दूसरे से झगड़ रहे होंगे, तो कमज़ोर लोग उन लोगों से, जो बड़े बनते थे, कहेंगे, "हम तो तुम्हारे पीछे चलने वाले थे। अब क्या तुम

> हमपर से आग का कुछ भाग हटा सकते हो?" वे लोग, जो बड़े बनते थे, कहेंगे, "हममें से प्रत्येक इसी में पड़ा है। निश्चय ही अल्लाह बन्दों के बीच फ़ैसला कर चुका।"
>
> (क़ुरआन 40:47-48)

नरक में अन्यायी अल्लाह से अपने सरदारों के लिए दोहरी यातना और लानत की विनती करेंगे।

> "जिस दिन उनके चहेरे आग में उलटे-पलटे जाएँगे, वे कहेंगे, "क्या ही अच्छा होता कि हमने अल्लाह का आज्ञापालन किया होता और रसूल का आज्ञापालन किया होता!" वे कहेंगे, "ऐ हमारे रब! वास्तव में हमने अपने सरदारों और अपने बड़ों की आज्ञा का पालन किया और उन्होंने हमें मार्ग से भटका दिया। "ऐ हमारे रब! उन्हें दोहरी यातना दे और उनपर बड़ी लानत कर!"
>
> (क़ुरआन 33:66-68)

काफ़िरों का नरक में डाले जाने का दृश्य

क़ुरआन ने इस दृश्य को शब्दों में सजोकर सदा के लिए लोगों को जगाने का स्रोत बना दिया है। उस समय वे अल्लाह के पैग़म्बरों का इनकार करना स्वीकार कर लेंगे।

> "जिन लोगों ने इनकार किया, वे गरोह के गरोह जहन्नम की ओर ले जाए जाएँगे, यहाँ तक कि जब वे वहाँ पहुँचेंगे तो उसके द्वार खोल दिए जाएँगे और उसके प्रहरी उनसे कहेंगे, "क्या तुम्हारे पास तुम्हीं में से रसूल नहीं आए थे जो तुम्हें तुम्हारे रब की आयतें सुनाते रहे हों और तुम्हें इस दिन की मुलाक़ात से सचेत करते रहे हों?" वे कहेंगे, "क्यों नहीं (वे तो आए थे)।" किन्तु इनकार करने वालों पर यातना की बात सत्यापित होकर रही। कहा जाएगा, "जहन्नम के द्वारों में प्रवेश करो। उसमें सदैव रहने के लिए।" तो बहुत-ही बुरा ठिकाना है अहंकारियों का!"
>
> (क़ुरआन 39:71-72)

यातना से बचने के लिए कुफ़्फ़ार नरक में मृत्यु की याचना करेंगे

नरक की यातना इतनी कठोर और भयावह होगी कि नरकवासी उससे बचने का हर प्रयत्न करेंगे। परन्तु जब कोई सफलता न मिलेगी तो वह सोचेंगे कि अब मृत्यु ही इससे बचने का एक मात्र हल है और वह इसके लिए अल्लाह से याचना करेंगे। पर आख़िरत का जीवन तो मृत्यु-रहित होगा अर्थात अनन्तकालीन। स्वर्ग में भी और नरक में भी।

"निस्संदेह अपराधी लोग सदैव जहन्नम की यातना में रहेंगे। वह (यातना) कभी उनपर से हल्की न होगी और वे उसी में निराश पड़े रहेंगे। हमने उनपर कोई ज़ुल्म नहीं किया, परन्तु वे ख़ुद ही ज़ालिम थे। वे पुकारेंगे, "ऐ मालिक! तुम्हारा रब हमारा काम ही तमाम कर दे!" वह कहेगा, "तुम्हें तो इसी दशा में रहना है। निश्चय ही हम तुम्हारे पास सत्य लेकर आए हैं, किन्तु तुममें से अधिकतर लोगों को सत्य प्रिय नहीं।" (क़ुरआन 43:74-78)

झूठी सफलता और यश लोगों को नरक से नहीं बचा पायेगा

जो लोग अपनी सांसारिक सफलता, सत्ता और यश के कारण ईश्वरीय मार्गदर्शन को ठुकराते हैं, उनकी सत्ता और सम्पन्नता उनको नरक से नहीं बचा सकेगी।

"पकड़ो उसे, और भड़कती हुई आग के बीच तक घसीट ले जाओ, फिर उसके सिर पर खौलते हुए पानी की यातना उंडेल दो!" "मजा चख, तू तो बड़ा बलशाली, सज्जन और आदरणीय है! यही तो है जिसके विषय में तुम संदेह करते थे।" (क़ुरआन 44:47-50)

"रहे दुर्भाग्यशाली लोग, तो कैसे होंगे दुर्भाग्यशाली लोग! गर्म हवा और खौलते हुए पानी में होंगे; और काले धुएँ की छाँव में, जो न ठंडी होगी और न उत्तम और लाभप्रद। वे

> इससे पहले सुख-सम्पन्न थे और बड़े गुनाह पर अड़े रहते थे। कहते थे, "क्या जब हम मर जाएँगे और मिट्टी और हड्डियाँ होकर रह जाएँगे, तो क्या हम वास्तव में उठाए जाएँगे? और क्या हमारे पहले के बाप-दादा भी?" कह दो, "निश्चय ही अगले और पिछले भी एक नियत समय तक इकट्ठे कर दिए जाएँगे, जिसका दिन ज्ञात और नियत है।"
>
> (क़ुरआन 56:41-50)
>
> "और रहा वह व्यक्ति जिसका कर्म-पत्र उसके बाएँ हाथ में दिया गया, वह कहेगा, "काश, मेरा कर्म-पत्र मुझे न दिया जाता और मैं न जानता कि मेरा हिसाब क्या है! ऐ काश, वह (मृत्यु) समाप्त करने वाली होती! मेरा माल मेरे कुछ काम न आया, मेरा ज़ोर (सत्ता) मुझसे जाता रहा!"
>
> (क़ुरआन 69:25-29)

दुनिया में बुरे समझे जानेवाले नरक में नहीं होंगे

संसार में जो लोग सत्य मार्ग पर चलने और पाप से बचने का प्रयत्न करते हैं, गुनाहगार लोग उनको आदर की दृष्टि से नहीं देखते। परन्तु आख़िरत में स्थिति पलट जाएगी। यही बुरे समझे जानेवालों को स्वर्ग में स्थान मिलेगा और जो स्वयं को सर्वश्रेष्ठ समझते रहे, वह सब नरक का ईंधन बनेंगे। यही बात नरकवासियों को आश्चर्य में डाल देगी।।

> "और वे कहेंगे, "क्या बात है कि हम उन लोगों को नहीं देखते जिनकी गणना हम बुरों में करते थे? क्या हमने यूँ ही उनका मज़ाक़ बनाया था, या उनसे निगाहें चूक गई हैं?" निस्संदेह आग में पड़नेवालों का यह आपस का झगड़ा तो अवश्य होना है।" (क़ुरआन 38:62-64)

नरकवासियों का एक-दुसरे पर आरोप लगाना

नरक में प्रविष्ट होने के उपरान्त उनके गिरोह आपस में ही

एक-दुसरे पर अपनी असफलता का आरोप लगाना आरम्भ कर देंगे। साथ ही अल्लाह से विनती भी करेंगे कि उनको पथभ्रष्ट करनेवालों को दोहरा दण्ड दिया जाए।

> "जब भी कोई जमाअत प्रवेश करेगी, तो वह अपनी बहन (अपनी जैसी दूसरी जमाअत) पर लानत करेगी, यहाँ तक कि जब सब उसमें रल-मिल जाएँगे तो उनमें से बाद में आनेवाले अपने से पहले वाले के विषय में कहेंगे, "हमारे रब! हमें इन्हीं लोगों ने गुमराह किया था तो तू इन्हें आग की दोहरी यातना दे।" वह कहेगा, "हर एक के लिए दोहरी यातना ही है। किन्तु तुम नहीं जानते।" और उनमें से पहले आने वाले अपने से बाद में आने वालों से कहेंगे, "फिर हमारे मुक़ाबले में तुम्हें कोई श्रेष्ठता प्राप्त नहीं, तो जैसी कुछ कमाई तुम करते रहे हो, उसके बदले में तुम यातना का मज़ा चखो!" (क़ुरआन 7:38-39)

एक इनसान के लिए सबसे बड़ा पाप है दूसरों को अल्लाह का साझी ठहराना। अफ़सोस कि इस पाप में मानवता सदा लिप्त रही है और आज भी है। आश्चर्यजनक तो यह है कि पूरे विश्व की जनसंख्या का बहुमत अपने जैसे इनसानों को अल्लाह का साझी ठहराता है और उसको तनिक भी पश्चाताप नहीं होता। परन्तु नरक में जब सारी वास्तविकता खुल जाएगी तो वहां यातना झेल रहे लोग अपनी इस पथभ्रष्टता को स्वीकार कर लेंगे। पर तब तक बहुत देर हो चुकी होगी।

> "और भड़कती आग पथभ्रष्ट लोगों के लिए प्रकट कर दी जाएगी। और उनसे कहा जाएगा, "कहाँ हैं वे जिन्हें तुम अल्लाह को छोड़कर पूजते रहे हो? क्या वे तुम्हारी कुछ सहायता कर रहे हैं या अपना ही बचाव कर सकते हैं?" फिर वे उसमें औंधे झोक दिए जाएँगे, वे और बहके हुए लोग और इबलीस की सेनाएँ, सबके सब। वे वहाँ आपस में झगड़ते हुए कहेंगे, "अल्लाह की क़सम! निश्चय ही हम

> खुली गुमराही में थे। जबकि हम तुम्हें सारे संसार के रब के बराबर ठहरा रहे थे। और हमें तो बस उन अपराधियों ने ही पथभ्रष्ट किया। अब न हमारा कोई सिफ़ारिशी है, और न घनिष्ट मित्र। क्या ही अच्छा होता कि हमें एक बार फिर पलटना होता, तो हम मोमिनों में से हो जाते!"
>
> (क़ुरआन 26:91-102)

नरकवासी स्वर्ग के लोगों से सहायता की गुहार लगाएंगे

एक ओर नरक की कठोर यातना और दूसरी ओर स्वर्ग की अनेकों सुविधाएँ। नरकवासी अपनी प्यास बुझाने के लिए स्वर्गवालों से थोड़ा पानी या अन्य चीज़ें देने की गुहार लगाएंगे। पर अल्लाह ने उनके लिए यह सब वर्जित कर दिया होगा।

> "आगवाले जन्नत वालों को पुकारेंगे कि, "थोड़ा पानी हमपर बहा दो, या उन चीज़ों में से कुछ दे दो जो अल्लाह ने तुम्हें दी हैं।" वे कहेंगे, "अल्लाह ने तो ये दोनों चीजें इनकार करनेवालों के लिए वर्जित कर दी हैं।" उनके लिए जिन्होंने अपना धर्म खेल-तमाशा ठहराया और जिन्हें सांसारिक जीवन ने धोखे में डाल दिया, तो आज हम भी उन्हें भुला देंगे, जिस प्रकार वे अपने इस दिन की मुलाक़ात को भूले रहे और हमारी आयतों का इनकार करते रहे।"

मुशरेकीन के साथ उनके झूठे ख़ुदा भी नरक में झोंके जाएंगे

शिर्क सबसे बड़ा पाप है। शिर्क करनेवालों को अल्लाह कदापि क्षमा नहीं करेगा। उनको तो नरक में डाला जाएगा, उनके साथ उनके झूठे माबूदों को भी उन्हीं के साथ नरक में झोंक दिया जाएगा।

> "वह तो बस एक झिड़की होगी। फिर क्या देखेंगे कि वे ताकने लगे हैं। और वे कहेंगे, "ऐ अफ़सोस हमपर! यह तो बदले का दिन है।" यह वही फ़ैसले का दिन है जिसे तुम झुठलाते रहे हो। (कहा जाएगा,) "एकत्र करो उन लोगों को

जिन्होंने ज़ुल्म किया और उनके जोड़ीदारों को भी और उनको भी जिनकी अल्लाह से हटकर वे बन्दगी करते रहे हैं। फिर उन सबको भड़कती हुई आग की राह दिखाओ!"

(क़ुरआन 37:19-23)

मुशरेकीन पर शिर्क का खोखला होना उजागर हो जाएगा

शिर्क एक अस्वाभाविक और अप्राकृतिक कर्म है जिसका सारा झूठ आख़िरत में उजागर हो जाएगा और मुशरेकीन अपनी गलती स्वीकार कर लेंगे ।

"फिर उनसे कहा जाएगा, "कहाँ हैं वे जिन्हें प्रभुत्व में साझी ठहराकर तुम अल्लाह के सिवा पूजते थे?" वे कहेंगे, "वे हमसे गुम होकर रह गए, बल्कि हम इससे पहले किसी चीज को नहीं पुकारते थे।" इसी प्रकार अल्लाह इनकार करनेवालों को भटकता छोड़ देता है। "यह इसलिए कि तुम धरती में नाहक़ मग्न थे और इसलिए कि तुम इतराते रहे हो। प्रवेश करो जहन्नम के द्वारों में, उसमें सदैव रहने के लिए।" अतः बहुत-ही बुरा ठिकाना है अहंकारियों का!"

वह दुष्कर्म जो लोगों को नरक का भागी बनाते हैं

नरक में डाले जानेवाला हर व्यक्ति अपने कर्मो के परिणामस्वरूप ही नरक का भागी बनेगा। ऐसा नहीं होगा कि किसी को गलती या अन्याय के साथ नरक में डाल दिया गया, जबकि वास्तव में वह स्वर्ग का हक़दार था। आख़िरत सम्पूर्ण और निष्पक्ष न्याय का स्थान है। उसमें न किसी के साथ अन्याय होगा, न भेदभाव। क़ुरआन में इसको स्पष्ट रूप से व्यक्त किया गया है।

"अल्लाह उन लोगों की बात सुन चुका है जिनका कहना है कि "अल्लाह तो निर्धन है और हम धनवान हैं।" उनकी बात हम लिख लेंगे और नबियों को जो वे नाहक क़त्ल करते रहे हैं उसे भी। और हम कहेंगे, "लो, (अब) जलने

की यातना का मज़ा चखो।" यह उसका बदला है जो तुम्हारे हाथों ने आगे भेजा। अल्लाह अपने बन्दों पर तनिक भी ज़ुल्म नहीं करता।" (क़ुरआन 3:181-182)

कुछ मुख्य पाप और दुष्कर्म हैं जो लोगों के नरक का भागी बनने का कारण बनते हैं; उनमें से कुछ इस प्रकार हैंः

1) **नास्तिकता**

"और जिन लोगों ने इनकार किया और हमारी आयतों को झुठलाया, वही आग में पड़नेवाले हैं, वे उसमें सदैव रहेंगे।" (क़ुरआन 2:39)

2) **शिर्क**

"अल्लाह शिर्क (अल्लाह का साझी ठहराना) को क्षमा नहीं करेगा। किन्तु उससे नीचे दर्जे के अपराध को जिसके लिए चाहेगा, क्षमा कर देगा और जिसने शिर्क किया, तो उसने एक बड़ा झूठ गढ़ लिया।" (क़ुरआन 4:48)

3) **निफ़ाक़ (कपटाचार)**

"निस्संदेह कपटाचारी आग (जहन्नम) के सबसे निचले खंड में होंगे, और तुम कदापि उनका कोई सहायक न पाओगे।" (क़ुरआन 4:145)

4) **कुफ़्र (कृतघ्नता)**

"निस्संदेह किताबवालों और मुश्रिकों (बहुदेववादियों) में से जिन लोगों ने कुफ़्र किया है, वे जहन्नम की आग में पड़ेंगे; उसमें सदैव रहने के लिए। वही पैदा किए गए प्राणियों में सबसे बुरे हैं।" (क़ुरआन 98:6)

5) **अल्लाह की अवतरित पुस्तकों को झुठलाना**

"क्या तुमने उन लोगों को नहीं देखा जो अल्लाह की आयतों के बारे में झगड़ते हैं, वे कहाँ फिरे जाते हैं? जिन लोगों ने किताब को झुठलाया और उसे भी जिसके साथ हमने अपने रसूलों को भेजा था। तो शीघ्र ही उन्हें मालूम हो जाएगा। जबकि तौक़ उनकी गरदनों में होंगे और ज़ंजीरें

(उनके पैरों में)। वे खौलते हुए पानी में घसीटे जाएँगे, फिर आग में झोंक दिए जाएँगे।" (क़ुरआन 40:69-72)

6) **अभिमान (अकड़)**

"रहे वे लोग जिन्होंने हमारी आयतों को झुठलाया और उनके मुक़ाबले में अकड़ दिखाई वही आग वाले हैं, जिसमें वे सदैव रहेंगे।" (क़ुरआन 7:36)

7) **आख़िरत के स्थान पर दुनिया को प्राथमिकता देना**

"जो कोई शीघ्र प्राप्त होने वाली को चाहता है उसके लिए हम उसी में जो कुछ किसी के लिए चाहते हैं शीघ्र प्रदान कर देते हैं। फिर उसके लिए हमने जहन्नम तैयार कर रखा है जिसमें वह अपयश-ग्रस्त और ठुकराया हुआ प्रवेश करेगा।" (क़ुरआन 17:18)

8) **अकारण दूसरों की हत्या**

"और जो व्यक्ति जान-बूझकर किसी मोमिन की हत्या करे, तो उसका बदला जहन्नम है, जिसमें वह सदा रहेगा; उसपर अल्लाह का प्रकोप और उसकी फिटकार है और उसके लिए अल्लाह ने बड़ी यातना तैयार कर रखी है।"(क़ुरआन 4:93) क़ुरआन की दूसरी आयतों से स्पष्ट होता है कि किसी की भी अकारण हत्या, हत्यारे को नरक का भागी बनाती है।

9) **पापी और अपराधी**

"निस्संदेह अपराधी लोग सदैव जहन्नम की यातना में रहेंगे। वह (यातना) कभी उनपर से हल्की न होगी और वे उसी में निराश पड़े रहेंगे। हमने उनपर कोई ज़ुल्म नहीं किया, परन्तु वे ख़ुद ही जालिम थे।" (क़ुरआन 43:74-76)

10) **अत्याचारी**

"फिर अत्याचारी लोगों से कहा जाएगा, "स्थायी यातना का मजा चख़ो! जो कुछ तुम कमाते रहे हो, उसके सिवा तुम्हें और क्या बदला दिया जा सकता है?" (क़ुरआन 10:52)

"जिन लोगों ने ईमानवाले पुरुषों और ईमानवाली स्त्रियों को

सताया और आज़माइश में डाला, फिर तौबा न की, निश्चय ही उनके लिए जहन्नम की यातना है और उनके लिए जलने की यातना है।" (क़ुरआन 85:10)

11) सूद

"और जो लोग ब्याज खाते हैं, वे बस इस प्रकार उठते हैं जिस प्रकार वह व्यक्ति उठता है, जिसे शैतान ने छूकर बावला कर दिया हो और यह इसलिए कि उनका कहना है, "व्यापार भी तो ब्याज के सदृश है," जबकि अल्लाह ने व्यापार को वैध और ब्याज को अवैध ठहराया है। अतः जिसको उसके रब की ओर से नसीहत पहुँची और वह बाज़ आ गया, तो जो कुछ पहले ले चुका वह उसी का रहा और मामला उसका अल्लाह के हवाले है। और जिसने फिर यही कर्म किया तो ऐसे ही लोग आग (जहन्नम) में पड़नेवाले हैं। उसमें वे सदैव रहेंगे।" (क़ुरआन 2:275)

यह कुछ मुख्य कर्म हैं जो एक इनसान को नरक में ले जाने का कारण बनते हैं, पर यह सूची इतने तक ही सीमित नहीं है। इनके अतिरिक्त अनेकों अन्य कारण हैं जिनको करने वाला नरक का भागी बनेगा, पर उन सबके विस्तृत वर्णन के बजाए उनमें से कुछ की सूची दी जा रही है। उनका विवरण पुस्तकों में देखी जा सकता है।

उसके रसूल पर अविश्वास करना, अल्लाह के निर्णित अनिवार्य का इनकार, हसद (दुर्भावनापूर्ण ईर्ष्या), झूठ बोलना, हेकड़ी, ज़ुल्म, ग़ीबत, नातेदारी से सम्बन्ध तोड़ना, जिहाद के मैदान से भागना, अल्लाह की दया से निराश हो जाना, अपव्यय-फ़िज़ूलख़र्ची, अल्लाह की निर्धारित सीमाओं का उल्लंघन, फ़साद फैलाना, जादू-टोना, माता-पिता की अवज्ञा करना, अनाथों के धन का उपभोग।

स्वर्ग की प्राप्ति एवं नरक से बचाव कैसे?

स्वर्ग और नरक की वास्तविकता भलीभांति जान लेने के उपरान्त वह कौन होगा जिसके हृदय में नरक का भय और स्वर्ग में प्रवेश की लालसा न जागृत हो? हर व्यक्ति चाहेगा कि उसे स्वर्ग में प्रवेश प्राप्त हो जाए और वहां अल्लाह की महान अनुकम्पाओं से लाभान्वित होने का अवसर मिले। इसी प्रकार हर व्यक्ति की प्रबल इच्छा होगी कि कैसे भी हो, वह नरक और उसकी यातनाओं से बच जाए।

यहाँ यह बात समझना आवश्यक है कि स्वर्ग में प्रवेश अथवा नरक से बचाव मात्र इच्छा और कामना पर निर्भर नहीं करता। इसके लिए जीवन-भर ठोस और निरंतर प्रयत्न करने की आवश्यकता होती है। अपने जीवन की रूप-रेखा उन ठोस आधारों पर निर्मित करनी होती है, जिनका ज्ञान अल्लाह और उसके पैग़म्बरों के अतिरिक्त कोई दूसरा प्रदान नहीं कर सकता, और जो ज्ञान वह समय-समय पर विभिन्न स्थानों पर अपने पैग़म्बरों के माध्यम से लोगों को प्रदान करता आया है। यही ज्ञान था जो उसने इस धरती के पहले मानव हज़रत आदम (अलै॰) को प्रदान किया था। यही ज्ञान उसने बाद में अपने समस्त पैग़म्बरों को दिया, जिनमें से कुछ प्रमुख नाम हैं हज़रत नूह (अलै॰), हज़रत इब्राहीम (अलै॰), हज़रत मूसा (अलै॰), हज़रत यूसुफ (अलै॰), हज़रत ईसा (अलै॰) और हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰)। उसके अंतिम पैग़म्बर हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) का अवतरण अब से 1450 वर्ष पूर्व अरब की धरती पर हुआ था और ईश्वर के आदेश से उन्होंने समस्त इनसानों के लिए उसी ज्ञान और मार्गदर्शन को फैलाने का प्रयत्न किया। अल्लाह ने अपनी असीम कृपा से अपने अंतिम ईशग्रंथ क़ुरआन में उस मार्गदर्शन को सदा के लिए समस्त मानवता की भलाई के लिए सुरक्षित कर दिया। क़ुरआन अरबी भाषा में है,

परन्तु सभी भाषाओं में उसके अनुवाद सहजता से हर स्थान पर उपलब्ध हैं। ईश्वर के इस अंतिम ग्रन्थ में स्वर्ग की प्राप्ति और नरक से बचाव का मार्ग विस्तार से वर्णित किया गया है।

अल्लाह क़ुरआन के माध्यम से इनसानों के समक्ष सफलता का सिर्फ और सिर्फ एक मानदण्ड प्रस्तुत करता है और वह यह है कि उसे नरक से बचा लिया जाए और स्वर्ग में प्रवेश प्राप्त हो जाए। जिस अभागे को स्वर्ग की प्राप्ति न हो सकी, उसका जीवन असफल हो गया, चाहे इस संसार में वह कितना ही सफल, शक्तिशाली, धनवान और बड़े पद पर आसीन रहा हो।

> "जिसे नरक की आग से बचा लिया गया और स्वर्ग में डाल दिया गया, बस वही सफल रहा।" (क़ुरआन 3:185)

हमारे जीवन का सबसे महत्वपूर्ण प्रश्न फिर इसके अतिरिक्त कुछ हो नहीं सकता कि सफलता के इस उच्चतम शिख़र तक कैसे पहुंचा जा सकता है? इसके सही उत्तर का ज्ञान यदि न हो, तो आदमी जिस मार्ग पर अपने जीवन को चला रहा होगा, वह उसे स्वर्ग तक कदापि नहीं पहुंचा सकेगा। अल्लाह ने सफलता के उस मार्ग का नाम सदा इस्लाम रखा था और आज भी उसका नाम इस्लाम ही है। क़ुरआन में उसने अत्यंत स्पष्ट शब्दों में यह घोषणा कर दी है कि इस्लाम के अतिरिक्त वह किसी अन्य मार्ग को स्वीकार नहीं करेगा।

> "दीन (धर्म) तो अल्लाह की नज़र में इस्लाम ही है।"
>
> (क़ुरआन 3:19)

> "जो इस्लाम के अतिरिक्त कोई और दीन (धर्म) तलब करेगा तो उसकी ओर से कुछ भी स्वीकार न किया जाएगा। और आख़िरत में वह घाटा उठाने वालों में से होगा।" (क़ुरआन 3:85)

सरलता के लिए यदि इन समस्त बातों को बिन्दुओं के रूप में प्रस्तुत किया जाए, तो वह इस प्रकार होंगीः

1) एकेश्वरवाद को उसके पूरे विस्तार के साथ स्वीकार कर लेना।

a. समस्त सृष्टि उसी की रचना है, जिसमें उसका कोई साझी नहीं। इनसानों को भी उसी ने पैदा किया है।
b. वही इस विशाल और असीमित संसार का अकेला प्रबंधक और संचालक है, जिसमें उसका कोई साझी नहीं।
c. वह सर्वव्यापी, सर्वशक्तिमान और सर्वज्ञानी है। किसी अन्य का यह स्थान न था, न है, न कभी हो सकता है।
d. आराधना, उपासना, पूजा, इबादत का अधिकार सिर्फ उसी का है। किसी अन्य का यह स्थान नहीं है कि उसके समक्ष सर झुकाया जाए और उससे प्रार्थना की जाए। उसकी दृष्टि में यह महापाप, विद्रोह और अकृतज्ञता का प्रतीक है।
e. उसका न कोई रूप है, न आकार और न ही उसकी कोई आकृति या प्रतिमा बनाई जा सकती है।

2) आख़िरत पर आस्था रखना।
a. हमारा यह सांसारिक जीवन इम्तेहान स्वरूप प्रदान किया गया है और एक दिन हमारे समस्त कर्मों का फल मिलेगा।
b. आख़िरत का जीवन अनन्तकालीन होगा।
c. सफल लोग स्वर्ग में जाएंगे और असफल नरक में।

3) उसके पैग़म्बरों (ईशदूतों) पर आस्था रखना।
a. हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) उसके अंतिम पैग़म्बर हैं। आपसे पहले विभिन्न काल और स्थान पर वह पैग़म्बर भेजता रहा है। इन सब पर आस्था रखना। परन्तु जीवन में मार्गदर्शन के लिए हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) का अनुसरण करना।
b. उनके आदेश के समक्ष किसी अन्य आदेश को निरस्त कर देना, चाहे वह किसी का भी हो।

4) उसके द्वारा अवतरित ग्रंथों पर आस्था रखना।
a. इनमें दिए ईश्वरीय क़ानून ही इनसानों को सफलता दिलाने की क्षमता रखते हैं। इनसानी कानून इनके अंतर्गत बनाए जाएंगे।
b. क़ुरआन उसका अंतिम ग्रन्थ है। उसने पहले भी ग्रन्थ

अवतरित किए थे, परन्तु समय के साथ वह सुरक्षित न रह सके और उनकी मौलिकता समाप्त हो गई। अल्लाह ने क़ुरआन में इनके नाम ज़बूर, तौरात और इन्जील बताए हैं।

इस पुस्तक की समाप्ति पर मैं अल्लाह से प्रार्थना करता हूँ कि वह पूरी मानवता को सत्यमार्ग का अनुसरण करने की शक्ति प्रदान करे और उसपर चलनेवालों के जीवन को सफल बनाए। आमीन।